
Shri Ramanandacharya Janmotsava Katha

श्रीरामानन्दाचार्यजन्मोत्सवकथा

Document Information

Text title : Shri Ramanandacharya Janmotsava Katha

File name : rAmAnandAchAryajanmotsavakathA.itx

Category : raama, rAmAnanda

Location : doc_raama

Author : agastya

Transliterated by : P. Sudarshana

Proofread by : P. Sudarshana

Latest update : December 22, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 22, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Ramanandacharya Janmotsava Katha

श्रीरामानन्दाचार्यजन्मोत्सवकथा



(मूल श्रीमद्गस्त्यसंछितान्तर्गता)

प्रथमोऽध्यायः

सिंहासने समासीनः सञ्चितः सीतयानुजैः ।

अतसी कुसुम श्यामो रामो विजयतेऽनिशम् ॥ १ ॥

अर्थ- अतसी यानी तीसी के पुष्प के समान श्याम वर्ण वाले अपने अभिन्न स्वरूप श्रीसीताजी के साथ दिव्य सिंहासन में विराजमान एवं अनुज श्रीभरतजी श्रीलक्ष्मणजी श्रीशत्रुघ्नजी तथा श्रीहनुमानजी से सदा सेवित सर्वेश्वर श्रीरामजी सर्वदा सर्वोत्कर्ष रूपसे विजय प्राप्त करें अर्थात् सभी परिकरों से सेवित दिव्य सिंहासनासीन श्रीरामचन्द्रजी को सादर दण्डवत् प्रणाम करता हूँ ।

स्वाश्रमे संश्रितं शिष्यैः प्रातर्द्धुतडुताशनम् ।

भोधयन्तं परं तत्त्वं तमगस्त्यं मडामुनिम् ॥ २ ॥

कृतक्षणाः सुतीक्ष्णस्तमुपागम्य कृताञ्जलिः ।

पश्यन्वनानि रम्याणि विचरंश्च मडामुनिः ॥ ३ ॥

भाविनो नूनं क्वौ भुध्वा विषयासक्तयेतसः ।

अज्ञानाल्पायुषः श्रीमच्छ्रीशाङ्घ्रिविमुष्मान्भुवि ॥ ४ ॥

संसारार्णवसम्मग्नान् कृपालुर्मुनिसत्तमः ।

उद्धर्तुं कामस्तांस्तस्मात् पृष्ठवान् श्रेय उत्तमम् ॥ ५ ॥

अर्थ- संसार रूप समुद्र में भटकते डुबे जूवों को देख परमकृपालु श्रीरामजी के साधन परायण मुनिजनों में श्रेष्ठ मडामुनि श्रीसुतीक्ष्णजी विषयों में सदा आसक्त मनवाले अज्ञानी एवं अल्प आयु वाले तथा सर्वेश्वर्यशास्त्री सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के आराध्य सर्वेश्वर श्रीरामजी के श्रीचरणकमलों से विमुग्ध होने से संसार समुद्र में निमज्जनशील कलिकाल में होने वाले जूवों को अनुभव कर उन जूवों के उद्धार की कामना से दैवी प्रेरणा से सुन्दर अवसर का अनुभव करके रमणीय वन प्रदेश में विचरण करते डुबे सुन्दर छोटा को देखते डुबे श्रीरामजी के अनन्य उपासक अपने गुरुदेव श्री अगस्त्यमुनिजी के आश्रम की ओर प्रस्थित डुबे, जडाओं प्रातः कालिक डवन को सम्पन्न कर स्वाध्याय में अनेक साधक शिष्यों के साथ आश्रम के प्रांगण में विराजमान छोकर मडामुनि श्री अगस्त्य

परतत्त्व “श्रीरामतत्त्व” का उपदेश कर रहे थे, उन मહर्षि श्री अगस्त्यज्जु के समक्ष उपस्थित होकर आदर के साथ
 दण्डवत् प्रणाम कर ढाय ज्जोडकर विनयपूर्वक सभी ज्जुवों के डेतु उत्तम श्रेय कारक प्रश्न पूछे ।

सुतीक्ष्ण उवाच -

भगवन् मुनिशार्दूल सर्वज्ञ कलशोद्भव ।

नृणां श्रेयसि मूढानां श्रेयश्चिन्तय सुप्रत ॥ ६ ॥

अर्थ- हे भगवन् ! मुनिश्रीं में श्रेष्ठ ! सर्वज्ञ ! कलश से उत्पन्न श्रीअगस्त्यज्जु ! हे श्रेष्ठ प्रत वाले गुरुदेव ! आप
 अपने उद्धार विषयक विचार के समान ही अपने श्रेय में मूढ - अज्ञानी ज्जुवों के कल्याण के लिये भी चिन्तन विचार
 करें क्योंकि आप श्रेय कार्य में तत्पर हैं अतः सभी का कल्याण करने में समर्थ हैं ।

उपायं वद निश्चित्य तेषां श्रेयो यथा भवेत् ।

परोपकारनिरताः साधवो हि कृपालवः ॥ ७ ॥

अर्थ- हे मुनिश्रेष्ठ ! अपने कल्याण को भी नहीं समझने वाले उन मूढः ज्जुवों का जिसप्रकार कल्याण हो वैसा
 सर्वजन सुलभ उपाय को विचार करके कहे क्योंकि आपके जैसे परोपकार में सदा तत्पर रहने वाले कृपालु अर्थात्
 साधुजन ही दूसरे का कल्याण कर सकते हैं अन्य नहीं ।

अगस्त्य उवाच -

कुम्भजोऽथनिशम्येत्यं वाचं मुनिसमीरिताम् ।

अल्पाक्षरमनल्पार्थं धर्मसम्प्रभूषिताम् ॥ ८ ॥

प्रसन्नवदनाम्भोजः प्रशस्य मुनिपुङ्गवः ।

तं प्रत्युवाच सम्प्रीतो वाचं वृद्धयर्षणीम् ॥ ९ ॥

अर्थ- मुनीश्वर श्रीसुतीक्ष्णज्जु की पूर्वोक्त प्रकार की अल्प अक्षर अर्थात् अतिविस्तृत अर्थ वाली तथा परोपकारमय
 धर्म सम्बन्धी प्रश्न से विभूषित विनम्र वाणी को सुनकर अति प्रसन्न मुण्डप कमल वाले मुनियों में अतिश्रेष्ठ
 कुम्भज श्रीअगस्त्य मुनिज्जु प्रसन्न होकर मुनि श्रीसुतीक्ष्णज्जु की प्रशंसा करके सर्वजनोपकारी मनोहारी वाणी
 श्रीसुतीक्ष्णज्जु को लक्ष्य करके श्रीसनकादिक कुमारों से सुना धितिलास सुनाने के लिये बोले ।

श्रूयतामितिहासोऽयं कुमारेभ्यो मया श्रुतः ।

मुनिवर्योमडाभागो जगतामुपकारकः ॥ १० ॥

डिरण्यगर्भसम्भूतो मतिमान् वाग्विदं वरः ।

सर्वलोकजनान् दृष्ट्वा विमूढान् विमुग्धाञ्छ्रुतेः ॥ ११ ॥

चिन्तयन् वत तच्छ्रेयोदिव्यं धाम जगाम सः ।

कृपालुरच्युतस्याद्यं सिद्धिभिः सिद्धभूषणम् ॥ १२ ॥

अर्थ- महर्षि श्रीअगस्त्यज्जु कहेते हैं- हे परोपकार परायण सुतीक्ष्णज्जु ! सावधानतया पावन प्रसंग को सुनें
 श्रीसनक सनातन सनन्दन अर्थात् सनत्कुमारों के प्रिय मुण्ड से मैंने जो धितिलास सुना है उसी पवित्र प्रसंग को सुनें-

श्रीब्रह्माञ्जु के मानस पुत्र संसार का उपकार करने वाले विद्वानों में अतिश्रेष्ठ परम कृपालु श्रीनारदञ्जु वेद यानी सनातन श्रीवैष्णवधर्म से विमुक्त अर्थात् अतिमूढ अपने कर्तव्य से रहित सभी ज्यों को देखकर उनके कल्याण यानी उद्धार के विचार से अग्रिमा आदि सिद्धियों से सदा भूषित अनेक सिद्ध पुरुषों से सर्वदा सेवित अपने स्थान से कभी भी विचलित नहीं होने वाले सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रञ्जु के दिव्यधाम श्रीअयोध्याञ्जु में गये ।

तत्र सिंहासनं दिव्यमध्यासीनं जगत्प्रभुम् ।

निजैर्वरायुधैः सर्वैर्मूर्तिमद्भिरुपासितम् ॥ १३ ॥

पार्षदप्रवरैः कृत्स्नैर्मंडालांभरभूषणैः ।

पद्मपत्रविशालाक्षं पद्मया पद्मनेत्रया ॥ १४ ॥

उपविष्टं जगद्धेतुं नारदोऽपश्यद्व्युतम् ।

दिव्याम्बरधरं देवं दिव्यभूषणभूषितम् ॥ १५ ॥

अर्थ- उस अवियल दिव्यधाम श्रीसाकेत में श्रीनारदञ्जु ने मूर्तिमान् अर्थात् दिव्य आकृति धारण किये लुये सभी दिव्य अर्थात् श्रेष्ठ आयुधों-धनुष बाण आदि से सेवित तथा अति मूल्यवान् वस्त्र अर्थात् आभूषण वाले पार्षदों में श्रेष्ठ श्रीलुनुमानञ्जु, श्रीअंगदञ्जु प्रभृति से सादर अति विनम्र भाव से सेवित, दिव्य वस्त्रों को धारण किये लुये तथा दिव्य भूषणों से विभूषित अर्थात् अति प्रकाशमान तथा अपने धाम से अन्त्यत्र कभी नहीं जाने वाले (-'अयोध्या क्वापि सन्त्यज्य पादमेकं न गच्छति" औसा आगम वचन है), कमल के समान नेत्र वाली अपने से अभिन्नरूपा श्रीसीताञ्जु के साथ विराजमान अर्थात् स्वयं भी कमल के सदृश मनोहर नेत्र वाले संसार के कारण स्वरूप अर्थात् जगत के आधारभूत स्वामी सर्वेश श्रीरामञ्जु को दिव्य सिंहासन पर विराजे लुये अवलोकन किये ।

प्रातस्तं प्रतुष्टाव लृष्टात्मा जगदीश्वरम् ।

जगद्योनिरयोनिस्त्वंव्यक्तोऽव्यक्ततरविभुः ॥ १६ ॥

अर्थ- सर्वेश्वर श्रीरामञ्जु की दिव्य जायँकी होने के बाद अति प्रसन्नचित्त वाले श्रीनारदञ्जु ने अतिनम्रता के साथ श्रीरामञ्जु को नमन कर जगदीश्वर, सारे संसार के ऐकमात्र आराध्य श्रीराघवञ्जु की स्तुति की, सर्वेश श्रीरामञ्जु ! आप जगत के कारण हैं सर्वकारण रूप होने से आपका कोई भी कारण नहीं है यानी आप से सब यरायत्र जगत लोक परलोक सभी उत्पन्न होते हैं पर आप किसी से भी उत्पन्न नहीं होते हैं । आप विभु सर्वव्यापक हैं अर्थात् व्यक्त स्थूल कार्यरूप संसार स्वरूप में हैं तो अव्यक्त- सूक्ष्म कारण रूपमें भी आप ही हैं यानी सूक्ष्म चित् चेतन ज्ञात्मावर्ग अर्थात् अचित् जडः प्रकृतिवर्ग अर्थात् स्थूल चित् ज्ञावर्ग और स्थूल अचित् प्रकृतिवर्ग भी आप ही हैं आप से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है अतः इस विश्व के अभिन्न निमित्तोपादान कारणरूप श्रीरामञ्जु ! आपको मैं सादर नमस्कार करता हूँ ।

कर्त्रे विश्वस्य सम्भत्रै संकर्त्रे ते नमोनमः ।

आदिमध्यान्तडीनाय प्रभवे परमात्मने ॥ १७ ॥

नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते विश्वबन्धवे ।

विश्वम्भर नमस्तेऽस्तु विश्वनाथ कृपाभ्युधे ॥ १८ ॥

अर्थ- हे सर्वेश्वर आप विश्व का सृजन करने वाले पालन करने वाले अेवं संडार करने वाले हैं, अैसे संसार डे सृष्टि स्थिति अेवं अन्त करने वाले ब्रह्मा विष्णु तथा भडेश रुप सर्वेसर्वा आपको बार-बार नमस्कार डे । आदि मध्य अेवं अन्त रडित सर्व समर्थ तथा सभी डे अन्तरात्मा स्वरुप आपको नमस्कार डे । समस्त जडयेतनात्मक विश्व स्वरुप आपको बार-बार नमस्कार डे । सारे संसार डे कल्याणकारक परम बन्धुरुप आपको नमस्कार डे । डे विश्व का भरण करने वाले श्रीरामजु ! डे विश्वनाथ ! डे कृपा डे समुद्र श्रीरामयन्द्रजु आपको बार-बार सादर नमस्कार डे ।

संसारेऽस्मिन् मडाधारे पापाभिरतयेतसाम् ।

जन्तूनां का गतिर्देव कर्मणा भ्रमतामिड ॥ १८ ॥

अर्थ- डे देव ! ँस मडाभयानक संसार में अपने कर्म कृलानुरुप भ्रमण करने वाले अेवं सदा पाप में डी चित्त देनेवाले जन्तु ज्वात्माओं डी कथा गति डोगी!

आलस्य धर्मे विमुषाविषयाकृष्ट मानसाः ।

सुभायतमानास्ते सुभ लेश विवर्जिताः ॥ २० ॥

अर्थ- वे सभी मनुष्य आलस्य डे कारण धर्म से विमुष डोकर विषय-वासना डी तरकृ आकृष्ट डोंगे । ँस थोडःे से सुभ डे कारण सम्पूर्णा धर्म डी छोडःे देंगे ।

मुक्तिस्तेषां कथं श्रीश भवेद्धर्मे कथं रतिः ।

कृपाकूपार भगवज्जन्तूनुद्धर माधव ॥ २१ ॥

अर्थ- डे श्रीश - श्रीसीतापति श्रीरामजु! सदा संसार में भ्रमणशील ज्वाँ डी मुक्ति डैसे डोगी अेवं सनातन धर्म में रति प्रेम डैसे डोगी ! डे भगवन् षडैश्वर्यशाली श्रीराम जु ! कृपा डे समुद्र श्रीरामयन्द्रजु ! डे माधव सर्व ज्वा रमणशील शरणागतवत्सल श्रीरामयन्द्रजु ँन डीन डीन ज्वाँ का उद्धार करें ।

श्रुतिस्मृत्युदिता धर्माः क्लेशसाध्या नृभिः सदा ।

अतस्त्वं सुकोपायं वद त्वद्भक्तिवर्धनम् ॥ २२ ॥

अर्थ- श्रीरामजु सायुज्य मुक्ति डे साधन श्रुति अेवं स्मृति में वर्णित धर्म मनुष्यों से अति क्लेश-कष्ट से साध्य हैं अैसे साधकडोग सदा से अनुभव करते आये हैं, अतः आपकी भक्ति डे बढाने वाला अति सरल ँपाय डी आप बतायें जिससे कलियुगी ज्वाणण भी सरलत्या आपको प्राप्त कर सकें ।

सर्वबन्धविनाशाय मुक्तये प्राणिनां प्रभो ।

प्रवक्ता त्वं डि धर्माणामविता जगतामपि ॥ २३ ॥

अर्थ- डे प्रभो ! सर्वसमर्थ श्रीरामजु ! आप साधक प्राणिवर्ग डे सभी कर्म बन्धनों डी नाश कर शाश्वतिक मुक्ति प्राप्ति डे मार्ग का ँपदेशक हैं अेवं अपने सनातन वैदिक धर्म डे प्रवक्ता- वास्तविक रुपसे ँपदेश करनेवाले भी आप डी है और जगत डी तथा संसार डे सद्धर्म डी रक्षा करने वाले भी आप डी है अतः श्रीरामभद्रजु कलियुग डे क्लेश से क्लान्तजनों डे उद्धार डे लिये सरल ँपाय का ँपदेश करें ।

धृत्वाकार्णव्यं भगवान् वाचं मुनिसमीरिताम् ।

तं प्रत्युवाच सम्प्रीतः शुचिस्मितमुष्णाम्बुजः ॥ २४ ॥

अर्थ- मधुर्षि श्रीअगस्त्यज्ज श्रीसुतीक्ष्णज्ज से कड रडे है, डे सुतीक्ष्णज्ज! पूर्वोक्त प्रकार की मुनीश्वर श्रीनारदज्ज की वाणी को सुनकर मन्द स्मित डारस्य से अनमोडक मुण्डरुप कमल से शोभायमान भगवान् श्रीरामज्ज अति प्रसन्नतपूर्वक उन श्रीनारदज्ज को कडे ।

मुनिवर्यं मडाभाग जगतां छितकारक ।

मया जगद्धितायैव पुरैतधारितम् ॥ २५ ॥

डे मडाभाग्यशाली मुनिश्रेष्ठ श्रीनारदज्ज ! जगत् डे छित करने वाले डे डेवर्षिज्ज ! जिस संसार डे कल्याण डे लिये आप आतुर डोकर प्रार्थना कर रडे है उस जगत् डे कल्याण डे लिये डी मैंने पडले से डी निश्चय कर रभा है ।

दिव्ये छि भारते वर्षे तीर्थराजे सुविश्रुते ।

प्रयागे पुण्यसदने भवद्भिर्नित्यसूरिभिः ॥ २६ ॥

सार्धमेवावतीर्याहं प्रणोष्ये मोक्षसाधनम् ।

दृढसंसारय स्य शातनं भक्तिवर्धनम् ॥ २७ ॥

सुवोधं सुकरं सर्वैर्धर्ममार्गं सुभावडम् ।

वेदवेदान्तसंस्थास्त्रसारभूतं सादाश्रयम् ॥ २८ ॥

अर्थ- मुनीश्वर! मैं दिव्य भारतवर्ष डे अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थराज प्रयाग में तीनप्रवर वाले वशिष्ठ गोत्रीय शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेय शाभाध्यायी कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रीपुण्यसदनशर्मा ज्ज डे घर में आप सब द्वादश मडाभागवतों, नित्यसूरियों डे साथ अवतार लेकर डे संसार रुप दृढः यक्क का नाश करने वाला, सभी को सडज्ज रुप से सुन्दर बोध कराने वाला, सभी सत्यदार्थ का आश्रम अेव वेदवेदान्त स्मृति संहिता आदि सत् शास्त्रों का सारभूत सारतत्परुप तथा भक्ति को बढःाने वाला और सभी सुण को डेने वाला मोक्ष का साधनभूत सनातनधर्म मार्ग का पुनः नवीनीकरण रुपसे परिस्कार कर विस्तार डडुंगा जिसका आप सबों डे द्वारा विश्व में प्रचार डोगा ।

तत्र तत्रावतीर्षास्तु भवन्तो वीतकल्मषाः ।

मदुक्तस्थोपदेष्टारः प्राणिभ्योतत्परायणाः ॥ २९ ॥

भविष्यन्ति मडात्मानो जगद्गुह्यारडेतवः ।

सुशीला धर्मनिरता जगतामुपकारकाः ॥ ३० ॥

अर्थ- उन-उन दिव्य भूमि में अवतीर्ण डोकर पापरहित आप सब द्वादश मडाभागवत भी ज्जुवों को मुजसे उपदिष्ट धर्म को संसार में धूम-धूम कर उपदेष्टा करने वाले डोकर अेव मत्परायण मुज में डी निष्ठा रभने वाले तथा जगत् डे उद्धार डे कारण तथा सुशील और मेरे धर्म में निरत अेव जगत् डे उपकारक डोकर संसार में प्रसिद्ध डोंगे ।

ये ब्रह्मीष्यन्ति सन्मार्गे प्राणिनो भक्तिरतत्पराः ।

स्यादनायासतोभोक्षस्तोषामत्र न संशयः ॥ ३१ ॥

अर्थ- जो ज्ञवात्मा भक्ति तत्पर सादर भक्ति में परायण होकर मुझसे उपदिष्ट सत् मार्ग का पूर्ण रूपसे ग्रहण करेंगे उन साधक ज्ञवों का अनायास सरलतया भोक्ष हो जायगा इस विषय में कोई भी संशय नहीं है ।

वाणीपीयूषमास्वाद्य क्षणमासीद्धरेर्मुनिः ।

मग्नः सुभसुधाभ्रमोघौ विनीतो गतसंशयः ॥ ३२ ॥

अर्थ- हे सुतीक्ष्ण ! अतिमग्न आचरण वाले वे श्रीनारद मुनि सब पापों को धरण करनेवाले श्रीरामजी के वाणीरूप अमृत का आस्वादन करते सर्व संशय रहित होकर के क्षण भर तो सुभरूप सुधा के समुद्र में डूब गये ।

निशम्यतद्वाक्यममोघमद्भुतं छिरण्यगर्भाङ्गसमुद्भवोमुनिः ।

प्रदृष्टरोमावलि भूषिताकृतिः कृतीकृतज्ञः कृतकृत्य इतिशुः ॥ ३३ ॥

अर्थ- सर्व नियमनशील ईश्वर श्रीरामजी की अमोघ एवं परम अद्भुत दिव्य वाणी को सुनकर श्रीब्रह्मजी के मानसपुत्र विवेकी परोपकार का आदर करनेवाले एवं आनन्द प्रयुक्त रोमावली से विभूषित शरीर वाले मुनीश्वर श्रीनारद कृत-कृत्य हुये ।

दृढव्रतस्याथविनम्रकन्धरः स्मरन् सुरेशस्य विभोः प्रतिश्रुतम् ।

प्रणम्य तं देववरं रमापतिं मलाविभूतेर्निरगात्ततः सुधीः ॥ ३४ ॥

अर्थ- दृढव्रत सावधानी से नियमों के पालन करनेवाले सर्वव्यापक एवं देवताओं के नियमन कर्ता सत्यसन्ध श्रीरामजी की प्रतिज्ञा का स्मरण करते हुये देवाधिदेव श्रीसीतापति श्रीरामचन्द्रजी को सादर मस्तक नमाकर प्रणाम करते मलाविभूति दिव्य श्रीसाकेतधाम से विशुद्ध बुद्धि वाले श्रीनारदमुनिजी प्रस्थित हुये ।

सुवाद्यन्टिव्ययशोऽथवल्लकीं हरेः स्वरब्रह्मविभूषितानसौ ।

गायन्श्रवणोके विचारसर्वतः सुरासुरेन्द्रैरभिपूजितोमुनिः ॥ ३५ ॥

अर्थ- दिव्यधाम से निवृत्त होने के बाद सुरेन्द्र देवताओं एवं अनुरेन्द्रों से पूजित मुनीश्वर श्रीनारदजी ब्रह्म स्वर से भूषित वीणा को अच्छी तरह से बजाते हुये श्रीराम के परम अद्भुत दिव्ययश को मधुर स्वर से गाते हुये सर्वत्र लोक में विचरने धूमने लगे ।

मुनीश्वरे देवऋषौविनिर्गतसुरैरपीऽप्यो जगतामधीश्वरः ।

रेमे रमेशोरमयास्मिताननः प्रभूतभूतैर्निदिव्यधामनि ॥ ३६ ॥

अर्थ- देवर्षि मुनीश्वर श्रीनारदजी के दिव्यधाम श्रीसाकेत से यत्ने जाने पर तीन लोक चौदह भुवनों के ईश्वर शासक आराध्य देव ब्रह्मा विष्णु शंकर आदि देवों से पूजनीय सदा सेवित मन्द डार्य मुभरूप कमल से शोभित रमेश - श्रीसीतापतिजी अनेक नित्यपार्षद एवं श्रीसीताजी के साथ अपने दिव्यधाम श्रीसाकेत में रमण करने लगे ।

एति श्रीमद् मूल अगस्त्यसंछितायां भविष्यण्डेऽगस्त्यसुतीक्ष्णसंवादे श्रीरामानन्दाचार्यावतारोपकमे श्रीरामानन्दसम्प्रोक्तं नामैकत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३१ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

व्यतीते द्वापरे पुण्ये श्रीमद्भगवतोऽङ्गिते ।

कलौ सत्त्वदरे पुंसां प्रवृत्तेऽधर्मवद्रूधके ॥ १ ॥

जनेऽधर्मरुचौ नित्यं शौचाचारविवर्जिते ।

भोक्षसाधनमार्गोऽप्यो विमुषे पशुतां गते ॥ २ ॥

मन्ये मन्दमतौ शश्वदल्पभाग्येऽल्प्य ज्वने ।

तत्रत्ये पापनिरते मलत्सङ्गविवर्जिते ॥ ३ ॥

प्रवर्धमानानभितो वादैर्निर्जित्य नास्तिकान् ।

आचार्यैर्भगवद्धर्मो वेदवेदान्तपारगैः ॥ ४ ॥

अर्थ- मलर्षि श्रीअगस्त्यञ्च श्रीसुतीक्ष्णञ्च से कल रडे उँ सुतीक्ष्णञ्च, जब पुण्यमय द्वापरयुग व्यतीत हो जायगा तब श्रीकृष्णञ्च के इस धरातल को त्याग देने पर अवे पुरुषों के सत्त्व का अपहरण करनेवाले तथा अधर्म का बढःाने वाले कलियुग के प्रताप का प्रवृत्त हो जाने पर और नित्य ही अधर्म में रुचि रखने वाले अवे शौच शुद्धता तथा आचार अवे विचार से रहित और भोक्ष के साधन रूप सत् मार्ग से विमुष और सर्वदा पशुधर्म को प्राप्त अवे आलस्ययुक्त तथा मन्दबुद्धि वाले और अल्प भाग्य वाले तथैव अल्प ज्वन वाले और सदा पाप कर्म में तत्पर तथा मलात्माजनों के संग सत्संगति से रहित इस लोक के ज्ववर्ग हो जायेंगे तब यारों ओर अतिप्रबलता से बढःते दुये नास्तिकों को सत् शास्त्रों से युक्तियों से ज़तकर सभी वेदवेदान्त अवे शास्त्रों में पारंगत आचार्यों ने मलान् उपार्यों से प्रयत्नपूर्वक संस्थापित सनातन वैदिक भगवद्धर्म याडिये उतना वृद्धि प्राप्त नहीं कर पायेगा ।

स्थापितोऽपि मलायोगवृद्धिं नैवगमिष्यति ।

विधातुं सत्यमनध सुरेऽयो निजभाषितम् ॥ ५ ॥

वीक्ष्य विष्णुः कृपासिन्धुः प्रबुद्धं तादृशं कलिम् ।

सदृशांश्च जनान् सर्वान् दुर्मतीन् क्लेशसंयुतान् ॥ ६ ॥

अर्थ- इस तथ्य को अवगम करके डे निष्पाप सुतीक्ष्णञ्च! इन्द्रादि देवों से सम्पूजनीय कृपा के सागर सर्वव्यापक श्रीरामञ्च अपनी वाणी को सत्य करने के लिये अधर्म परतया वृद्धिप्राप्त कलियुग अवे दुर्मति तथा क्लेश परायण सभी ज़वों को टेभकर तथा धर्मरक्षाणार्थ अवतार लेने की अपनी प्रतिज्ञा को स्मरण करके अवतार लेने के लिये विचार करेंगे ।

मनः कर्ताऽवताराय स्मृत्वाथो स्वं प्रतिश्रुतम् ।

भं नभो वेद वेद प्रमिते वर्षे गते कलौ ॥ ७ ॥

कालिन्दी जाडन्वीसङ्गशोभिते देवपूजिते ।

तीर्थराजे मलापुण्ये प्रयागे तीर्थ उत्तमे ॥ ८ ॥

गृडे श्रीपुण्यसदनद्विजातेर्भूरिकर्माणाः ।

योगिनो योगयुक्तस्य कान्यकुब्जशिरोमणोः ॥ ९ ॥

पतिसेवा परा तस्य सुशीला गृह्णिणी ततः ।

माघकृष्णस्य सप्तम्यां शुभधर्मप्रवर्तके ॥ १० ॥

सप्तम्यादोद्गते सूर्ये सिद्धयोगयुजिप्रभुः ।

नक्षत्रे त्वष्ट्रैवत्ये कुम्भलगे शुभत्रये ॥ ११ ॥

अयं सर्वगुणोपेते देशे काले य माधवः ।

गुण्ये पुण्ये शरण्यः स शरणागतवत्सलः ॥ १२ ॥

आविर्भूतो मलायोगी द्वितिय एव भाष्करः ।

रामानन्द इतिष्यातो लोकोद्धारण कारणः ॥ १३ ॥

अर्थ- कलियुग के चार उजार तीनसौ वर्ष (४४००) यानी विक्रमसंवत् के बारहसौ छप्पन (१२५६) व्यतीत हो जाने पर श्रीगंगा अयं यमुना के पवित्र संगम से सुशोभित तथा देवताओं से पूजित और सभी तीर्थों में अति श्रेष्ठ मलान् पुण्यमय प्रयाग नाम से लोकप्रसिद्ध तीर्थराज में वशिष्ठ गोत्रीय त्रिप्रवरान्वित शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण जो योगयुक्त अयं श्रीरामचन्द्रजो के आराधना रूप भूरिकर्म अति उत्तम कर्म को सदा करनेवाले हैं उन योगी श्रीपुण्यसदन शर्माजो नाम के ब्राह्मण के यहाँ पतिप्रता में प्रधान श्रीसुशीलाजो नाम की श्रीशर्माजो की धर्मपति लोगी उन्हीं पतिप्रता देवी के गर्भ से माघकृष्ण पक्ष को सभी तिथि के शुभ दिन में जबकि लोकधर्म प्रवर्तक श्रीसूर्य भगवान् के सात दण्ड यले लोंगे अयं सिद्ध योग युक्त चित्रा नक्षत्र तथा कुम्भ लग्न और सभी त्रयों के शुभ स्थान में होने पर अयं सभी गुणों से युक्त पावन काल में तथा सभी गुणों से संयुक्त अतिपवित्र प्रदेश प्रयागराज में सभी साधकों के उद्धार के कारणरूप शरणागतवत्सल मलान् योगी शरण में आये सभी ज्यों का रक्षक (“रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले” इस आगम प्रमाण से बोधित) स्वयं सर्वेश्वर श्रीरामजो ही दीप से उत्पन्न दूसरे दीप के समान आविर्भूत होकर “रामानन्द” जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य, नाम से जगत में विख्यात लोंगे ।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जो के अवतार के विषय में श्रीमद्वाल्मीकि संछिता में लिखा है -

आचार्या बहवोऽभूवन् राममन्त्रप्रवर्तकाः ।

किन्तु देवि क्लेशरादौ पाप्मण्डप्रयूरे जने ॥

रामानन्देति भविता विष्णुधर्मप्रवर्तकः ।

यदा यदा हि धर्मोऽयं विष्णोः साकेतवासिनः ॥

कृशतामेति भो देवि! तदा स भगवान् हरिः ।

रामानन्दयतिर्भूत्वा तीर्थराजे व पावने ॥

अवतीर्थ जगन्नाथो धर्म स्थापयते पुनः ।

अर्थात्- हे देवि श्रीराममन्त्र के प्रवर्तक आचार्य बहुत दुये हैं किन्तु कलियुग के आदि ! में पाप्मण्डिजनों के बहुत बढः जाने पर वैष्णव धर्म का विशेष रूपसे प्रवर्तक प्रवर्धक “श्रीरामानन्दाचार्य” जो इस नाम से लोकप्रख्यात

आचार्य डोंगे, क्योकि श्रीसाकेत निवासीजु का यल श्रीवैष्णवधर्म जब जब डस को प्राप्त कर जाता है तब तब वे डी जगत् के नाथ श्रीरामजु, श्रीरामानन्दाचार्य नामक यतिराज के रूपमें पावन तीर्थराज प्रयाग में अवतार लेकर पुनः धर्म की स्थापना करेंगे ।

(वाल्मीकि संहिता प । २३-२६)

अेवं वैश्वानर संहिता में लिखा है-

सोऽवतारज्जगन्मध्ये जन्तूनां भयसङ्कुटात् ।

पारङ्कुर्तुं छि धर्मात्मा रामानन्दस्वयं स्वभूः ॥

माघे य कृष्णसप्तम्यां यित्रानक्षत्रसंयुते ।

कुम्भलग्ने सिद्धयोगे सप्तदण्डगते रवी ॥

रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो मडीतले ।

अर्थ- यानी जुवों को मडान् संकट से पार उतारने के लिये सर्व समर्थ स्वयं सर्वेश्वर श्रीरामजु धर्मात्मा यतिराज श्रीरामानन्दाचार्यजु के रूपमें पृथिवी में अवतरित हुये । यित्रा नक्षत्र से युक्त कुम्भ लग्न सिद्धयोग अेवं सूर्य के सात दण्ड व्यतीत होने पर माघमास के कृष्णपक्ष के सप्तमी तिथि (१२पक्ष वि । सं) में स्वयं सर्वेश श्रीरामजु डी एस भूतल में श्रीरामानन्दाचार्यजु के रूपमें प्रकट हुये ।

एसप्रकार वैश्वानरसंहिता में लिखा है अतः जगदाचार्य श्री साक्षात् श्रीराम रूप डी है ।

अष्टमेऽब्दे योपवीतं जातं तस्य तदाख्यसौ ।

ब्रह्मचर्यं गृहीत्वा तु विद्याभ्यासं करिष्यति ॥ १४ ॥

अर्थ- श्रीरामानन्दाचार्यजु का आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न डोगा अनन्तर से अण्ड ब्रह्मचर्य पालन प्रत का ब्रह्मण कर विद्याभ्यास करेंगे ।

वर्षे द्वादशके जाते काश्यां गत्वा पुनः स्वयम् ।

वेदवेदाङ्गशास्त्राणि पुराणानि पठिष्यति ॥ १५ ॥

अर्थ- पुनः बारड वर्ष के डो जाने पर काशी में पञ्चगंगाघाट पर स्थित (श्रीमठ) आचार्यपीठ में शास्त्रीय नियमानुसार आचार्य श्री के श्रीमुण से श्रवणानन्तर स्वयं यथार्थ रूपसे पढेंगे-पूरुतः अनुशीलन करेंगे ।

आचार्यलक्षाणैर्युक्तं वेदवेदान्तपारगम् ।

श्रीसम्प्रदायश्रेष्ठञ्च जनोंद्वारपरं सदा ॥ १६ ॥

विज्ञाय राघवानन्दं लब्ध्वा तस्मात् षडक्षरम् ।

रडस्यत्रयवाक्यार्थं तात्पर्यार्थं च सन्मतम् ॥ १७ ॥

अर्थ- मनुस्मृति में लिपे “उपनीयतु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः । सांगञ्च सरडस्यं च तमाचार्यं प्रयक्षते” (२।१४०) यानी जो द्विज शिष्य का उपनयन संस्कार करके अंग अेवं रडस्य के साथ वेद पढःाता है उसे आचार्य कडा जाता है, धत्यादि आचार्य के लक्षणों से युक्त वेद अेवं वेदान्त शास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता और सर्वदा

जन्म लोके के उद्धार करने में तत्पर अर्थात् श्रीसम्प्रदाय के श्रेष्ठ प्रधान आचार्य के रूपमें आचार्यपीठासीन जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी को अनुभव करके उन्हीं आचार्य श्री से सविधि शास्त्रीय संस्कारपूर्वक श्रीवैष्णवीय विरक्त संन्यास दीक्षा के साथ तारक षडक्षर श्रीराम मलामन्त्र शरणागति मन्त्र अर्थात् यरममन्त्र छन्द रक्षत्रयों को प्राप्त कर उनसे वाच्यार्थ अर्थात् वेद तथा पूर्वार्थ रक्षत्र ग्रन्थ सम्मत तात्पर्यादि अर्थों को भी प्राप्त करके आचार्य के दिव्य लक्षणों से परिलक्षित होंगे ।

आचार्यलक्षणैर्दिव्यैर्लक्षितो वै भविष्यति ।

प्रवृत्ता सर्वधर्माणामनुष्ठाता य कर्मणाम् ॥ १८ ॥

रक्षिता धर्मसेतुनामुपदेष्टा मलयशाः ।

शश्वद्वैष्णवधर्माणां मलाकीर्तिरुदारधीः ॥ १९ ॥

अर्थ- वे जगदाचार्य श्रीरामानन्दाचार्यजी सभी धर्मों के व्याख्यान सांगोपांग रूपसे उपदेश करने वाले भगवत् आराधनादि सभी धर्मों के अनुष्ठान करने वाले और वैदिक धर्म के मर्यादा की रक्षा करने वाले तथा श्रीवैष्णवधर्म का सर्वदा उपदेश करनेवाले यश अर्थात् मलाकीर्ति वाले और अतिउदार बुद्धि वाले होंगे ।

प्रसन्नवाम्भोजो विशालाक्षो मलाम्बुजः ।

दृपालुस्सर्वज्ञवानामितरेषां य नित्यशः ॥ २० ॥

संसाराम्भोनिर्घोरात्समुद्धारपरायणः ।

वेदवेदान्तनिरतस्सर्वशास्त्रविशारदः ॥ २१ ॥

अर्थ- अर्थात् वे सदा प्रसन्न मुष्णारविन्द वाले विशाल नेत्र अर्थात् मलान् बुजवाले तथा परम दृपालु होंगे और सभी नीय लक्षणों वाले हैं उत्पन्न ज्ञात्मावर्ग तथा अन्य योनी में उत्पन्न ज्ञवर्गों के भयानक संसाररूप समुद्र से समुद्धार के लिये सर्वदा तत्पर रहने वाले तथा अंगों के सङ्घित वेद अर्थात् वेदान्त के अन्वयास में स्वयं तत्पर रहकर शिष्यवर्गों को भी सर्वदा तत्पर कराने वाले सभी शास्त्रों में पारंगत होंगे ।

कामान् पुरवितानृणां कविः कल्पद्रुमो यथा ।

गुणवान् दयितः पूज्यः सर्वज्ञोविजितेन्द्रियः ॥ २२ ॥

अर्थ- श्रीरामानन्दाचार्यजी सत् अर्थात् असत् का विवेक करनेवाले तथा कल्पवृक्ष के समान सभी मनुष्यों की कामनाओं को पूर्ण करनेवाले अर्थात् गुणवान् तथा सभीवर्ग के व्यक्तियों के प्रेमी और पूजनीय तथा सर्वज्ञवस्तु को यथातथ्य रूपसे जानने वाले और जितेन्द्रिय होंगे ।

शोभिष्यति धर्मरतैःसद्भिःपरिवृतोऽनिशम् ।

लोके पूर्णकलः भे वै शीतांशुभङ्गाशैरिव ॥ २३ ॥

वे जगदाचार्यजी जिस प्रकार आकाश में नक्षत्र गणों से परिवेष्टित कलाओं से पूर्ण चन्द्रमा सुशोभित होता है उसीप्रकार लोक में धर्मपरायण सज्जनों से सर्वदा परिवेष्टित सेवित होते हुये सदा शोभित होंगे ।

सुशीलः समदृक्शान्तोदान्तः श्रीमान् जगद्गुरुः ।

पुनः सत्सम्प्रदायस्य वर्त्तयिता मुनीश्वरः ॥ २४ ॥

अर्थ-वे सुशील अवेवं सभ्मी वर्ग में समान दृष्टि वाले अवेवं रागद्वेष प्रभृति दोषों से रक्षित शान्त तथा क्लेश आदि को सखन करनेवाले दान्त सर्व श्रीसम्पन्न अवेवं मुनीश्वर धर्मशास्त्रि के तत्त्वों का सर्वदा मननशील साधकों में श्रेष्ठ जगद्गुरु संसार के लोगों का सन्मार्गोपदेश से अन्धकार को दूरकर ज्ञानरूप प्रकाश के द्वारा सायुज्य मुक्ति प्रदाता, वे जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी कार्य कलाप से शिथिलता को प्राप्त अनादि वैदिक सत् श्रीसम्प्रदाय (जो सम्प्रदाय समस्त चारों युगों में प्रतिष्ठित हो) उसका पुनः इस भूमिपुत्र में प्रवर्तन-संवर्धन, प्रसारण करने वाले होंगे ।

कृपया यस्य लोकेऽस्मिन् जनाः सर्वेनिरामयाः ।

श्रीरामभक्तिनिरताः सदा धर्मपरायणाः ॥ २५ ॥

अर्थ- उन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी की असीम कृपा से इस लोक में सभ्मी जन रोग रक्षित अवेवं सर्वदा धर्मपरायण और सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति में निरत रहेंगे ।

तादृशस्य मडाभुद्रे यगिवर्यस्य सत्त्वः ।

गुणान् कात्स्न्येन संवक्तुं कविःकक्षमतेऽधुना ॥ २६ ॥

अर्थ- मुनीश्वर सुतीक्ष्ण ! पूर्व वर्णित गुणों से युक्त मडान् बुद्धिशाली योगियों में श्रेष्ठ अनेक सद् ग्रन्थरत्नों प्रस्थानत्रयों के आनन्दभाष्यादि के निर्माता जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के सम्पूर्णे गुणों का वर्णन करने में कौन कवि ऐसा होगा जो समर्थ हो सके ।

तेऽथाप्यवतरिष्यन्ति भगवन्मतकोविदाः ।

स्वयम्भूप्रमुखाः सर्वे मडान्तो नित्यसूरयः ॥ २७ ॥

धृङ्गितज्ञा उरेराज्ञां वडन्तः शिरसा मुदा ।

नानादेशेषु वर्णेषु तत्तत्कालेऽर्कसन्निभाः ॥ २८ ॥

अर्थ- हे सुतीक्ष्ण ! जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के अवतार के बाद भगवत् मत सनातन श्रीवैष्णवमत धर्म को जानने वाले “स्वयम्भूर्नारदः शम्भुः कुमारः कपिलो मनुः । प्रह्लादो जनको भीष्मो बलिवीयासकिर्वयम् ॥ द्वादशैते विज्ञानियो धर्म भागवतं भटाः” अर्थात् इस श्रीमद् भागवतपुराण के वचनानुसार भागवत धर्म को तत्त्वतः जानने वाले श्रीस्वयम्भुब्रह्माजी श्रीनारदजी श्रीशम्भुजी श्रीकुमारजी श्रीकपिलजी श्रीमनुजी श्रीप्रह्लादजी श्रीजनकजी श्रीभीष्मजी श्रीबलिजी श्रीशुकमुनिजी अवेवं श्रीयमजी, ये मडाभागवत भी भगवान् श्रीरामजी के नित्यपार्श्वदण्ड श्रीरामचन्द्रजी के ङ्गित धसारे को जाननेवाले आनन्दपूर्वक श्रीरामजी की आशा का शिरोधार्य कर उसका पूर्ण करनेवाले बारह सूर्य के समान दृष्टिव्यमान तेजवाले ये बारह मडाभागवत भी नानादेश-अलग अलग स्थान अलग अलग काल अवेवं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अवेवं शूद्र प्रभृति भिन्न भिन्न वर्णों में अवतरित होंगे ।

आयुष्मन् कृत्तिकायुक्तपूर्णिमायां धनेशनौ ।

स्वयम्भूः कार्तिकस्याह्वाऽनन्तानन्दोभविष्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-पूर्व सूचित मडाभागवतों के अवतारों को अलग अलग रूपसे वर्णन हेतु मधुर्षि श्री अगस्त्य ञु कहे हैं-
 हे आधुष्मान् सुतीक्ष्णञु! जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यञु के प्रधान शिष्य के रूपमें साक्षात् स्वयम्भू-श्रीब्रह्माञु की
 कार्तिक मास की कृतिका नक्षत्र से युक्त पूर्णमासी तिथि धन लग्न अवं शनिवार के दिन मधेशपुर उत्तर प्रदेश में श्री
 अनन्तानन्द नाम से अवतरित होंगे ।

योगनिष्ठः सदा धीमान् सदाचारपरायणः ।

शिष्य आचार्यवर्यस्य रामानन्दस्यधीमतः ॥ ३० ॥

अर्थ- ये सर्वदा योगाभ्यास में स्थित रहने वाले अवं बुद्धिमान्, सर्वदा सदाचार में तत्पर रहने वाले वे
 श्रीअनन्तानन्दञु अन्तान्त प्रपन्न बुद्धिशाली आचार्य प्रवर जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यञु के शिष्य होकर श्री
 अनन्तानन्दाचार्यञु के नाम से विख्यात होंगे ।

जातः सुरसुरानन्दो नारदो मुनिसत्तमः ।

वैशाखसितपक्षस्य नवम्यां स वृषे गुरौ ॥ ३१ ॥

अर्थ- प्रसिद्ध श्रीसुरसुरानन्दाचार्यञु के रूपमें मुनियों में श्रेष्ठ श्रीनारदञु की वैशाख शुक्ल की नवमी श्रीजनकी
 नवमी तिथि गुरुवार अवं वृष लग्न में (पैषम, लग्ननौ में) समवारित होंगे ।

शुद्धे वरुण त्मे योगे शीलरत्नाकरो मडान् ।

मन्त्रमन्त्रार्थसन्निष्ठो गुरुभक्तिपरायणः ॥ ३२ ॥

तस्यामेव तुलालग्रे तादृशीन्दुरिवोत्राधीः ।

शम्भुरेव सुभानन्दः पूर्वाचार्यार्थनिष्ठकः ॥ ३३ ॥

अर्थ- शतभिषा नक्षत्र से युक्त तुला लग्न में वैशाख शुक्ल नवमी - श्रीजनकी नवमी के दिन में शील के समुद्र शिष्य
 के अज्ञानरूप अन्धकार को दूरकर ज्ञानरूप प्रकाश को प्रदान करने वाले गुरुदेव जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यञु की सेवा
 में परायण यन्द्रमा के समान तीक्ष्ण बुद्धि वाले भगवान श्री आनन्दभाष्यकार अवं पूर्वाचार्यों के सत् सिद्धान्त में
 दृढ निष्ठा वाले श्रीराममन्त्र अवं अन्य मन्त्रार्थों के विचार में सदा संलग्न श्रीशंकरञु की श्रीसुभानन्दाचार्यञु के
 रूपमें अवतरित होकर प्रसिद्ध होंगे ।

व्यतिपातेऽनुराधात्मे शुद्धे मेघे गुणाकरे ।

वैशाखशुक्लपक्षस्य तृतीयायां मडामतिः ॥ ३४ ॥

कुमारो नरहरियानन्दो जात उदारधीः ।

वर्णाश्रमकर्मनिष्ठः शुभकर्मरतः सदा ॥ ३५ ॥

अर्थ- श्रीसनत्कुमारञु वैशाख शुक्ल तृतीया शुक्लवार अनुराधा नक्षत्र अवं व्यतिपात योग तथा गुणाकर मेघ लग्न
 में मडाबुद्धिशाली वर्णाश्रम सम्बन्धी धर्म कर्म में परमनिष्ठ वाले श्रीरामञु की आराधना आदि शुभ कर्मों में सर्वदा
 लगे रहने वाले श्रीनरहरियानन्दाचार्यञु के रूपमें अवतरित होकर प्रसिद्ध होंगे ।

वैशाखकृष्णसप्तम्यां मूले परिघसंयुते ।

बुधे कर्कडथकपिलोयोगानन्दो जनिष्यति ॥ ३६ ॥

अर्थ- श्रीकपिलमुनिज्जु वैशाख कृष्ण सप्तमी मूल नक्षत्र अवं परिधयोग कर्क लत्र और बुधवार को श्री योगानन्दाचार्यज्जु के रुपमें अवतरित होकर प्रसिद्ध होंगे ।

योगनिष्ठो मलायोगी सत्सेवितपदाम्बुजः ।

सदावैष्णवधर्माणामुपदेशपरायणः ॥ ३७ ॥

मनुः पीपाभिदोजात उत्तराङ्गाल्गुनीयुजि ।

पूर्णिमायां ध्रुवे चैत्र्यां धनवारे बुधस्य च ॥ ३८ ॥

अर्थ-श्रीमनुज्जु उत्तराङ्गाल्गुनी नक्षत्र ध्रुवयोग धन लत्र में चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि बुधवार के दिन सदा योग साधना में रहने वाले मलायोगी सत्युरुषों से सेवित यरराकमल वाले तथा सर्वदा श्रीवैष्णवधर्म के उपदेश में तत्पर श्रीपीपाचार्यज्जु के रुपमें अवतरित होकर प्रसिद्ध होंगे ।

निष्ठा तदीयकैङ्कर्ये सतस्तस्य मलात्मनः ।

नक्षत्रे शशिदैवत्ये चैत्रकृष्णाष्टमी तिथौ ॥ ३९ ॥

प्रह्लादोऽपि कविरस्तु कुजे सिंहे च शोभने ।

जातो वेदान्तसन्निष्ठः क्षेत्रवासरतः सदा ॥ ४० ॥

अर्थ-श्रीप्रह्लादज्जु भी मृगशिरा नक्षत्र शोभन योग अवं सिंहलत्र में चैत्र कृष्ण अष्टमी मंगलवार को श्रीकबीरज्जु के नाम से अवतरित होंगे तथा वे सदा तीर्थों में निवास रत रहेंगे अवं वेदान्त आदि सभी शास्त्रों में दृढ निष्ठा वाले होंगे और वे जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु की सेवा में सर्वदा दत्तचित्त होकर श्रीरामकबीराचार्यज्जु के नाम से संसार में प्रसिद्ध होंगे ।

भावानन्दोऽथ जनको मूले परिधसंयुते ।

वैशाखकृष्णषष्ठयान्तुर्कर्कयन्द्मजनिष्यति ॥ ४१ ॥

अर्थ- श्रीजनकज्जु मूल नक्षत्र परिधयोग कर्क लत्र में वैशाख कृष्ण षष्ठी सोमवार को श्रीभावानन्दज्जु के रुपमें अवतरित होंगे, वे मलाबुद्धिशाली मलात्मा-परतत्त्व चिन्तन में संलग्न अवं सर्वदा सर्वेश्वर श्रीरामज्जु की सेवा में तत्पर श्रीभावानन्दाचार्यज्जु के नाम से जगत में प्रयाति प्राप्त करेंगे ।

रामसेवापरोनित्यं स मलात्मा मलामतिः ।

भीष्मः सेनाभिधो नाम तुलायां रविवासरे ॥ ४२ ॥

द्वादश्यां माघकृष्णे तु पूर्वभाद्रपदे च मे ।

तदीयाराधनेसक्तो ब्रह्मयोगे जनिष्यति ॥ ४३ ॥

अर्थ- श्रीभाष्मज्जु पूर्वभाद्रपद नक्षत्र ब्रह्मयोग तुला लत्र में माघकृष्णपक्ष की द्वादशी अवं रविवार को श्रीसेनज्जु के नाम से अवतरित होंगे वे भगवान् तथा भगवद्भक्तों की सेवा में सदा तल्लीन रहेंगे और श्रीसेनदासज्जु के नाम से प्रसिद्ध होंगे ।

श्रीमाघस्यासिताष्टम्यां वृश्चिके शनिवासरे ।

धनाभिधोवलिः साक्षात्पूर्वषाढ्युते शिवे ॥ ४४ ॥

वरो भक्तिमतां जातस्तदीयाराधने रतः ।

सदाचारपरो धीमान् गुरुपादाम्बुजार्थकः ॥ ४५ ॥

अर्थ-साक्षात् श्रीबलिज्जु डी पूर्वाषाढ्या नक्षत्र शिवयोग अवं वृश्चिक लग्न में माघकृष्ण अष्टमी शनिवार को श्रीधनाज्जु के नाम से अवतरित होंगे वे बुद्धिमान् भक्तिमान् पुरुषों में श्रेष्ठ भगवद्भक्तों की आराधना सेवा करने में सदा तत्पर सदाचारों के पालन में सदा निरत अवं गुरुदेव जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु के श्रीचरणकमलों के आराधन करनेवाले होंगे तथा श्रीधनादासज्जु इस नाम से लोक प्रसिद्ध होंगे ।

तत्त्वज्ञो गालवानन्दो जात ऐकादशीतिथौ ।

चैत्रे वैयासकिञ्चन्द्रे कृष्णे लग्ने वृषे शुभे ॥ ४६ ॥

सर्वदाज्ञाननिष्ठोऽयमुपदेशपरायणः ।

वेदवेदान्तनिरतो मलायोगी मलाभितिः ॥ ४७ ॥

अर्थ- श्रीरामतत्त्व को जानने वाले श्रीव्यासनन्दन शुक्मुनिज्जु शुभयोग वृष लग्न चैत्र कृष्णपक्ष के ऐकादशी तिथि सोमवार को श्रीगालवानन्दज्जु के रूपमें अवतरित होंगे, वे मलायोगी मलाबुद्धि वाले अवं वेद तथा वेदान्त में रत और तत्त्व ज्ञाननिष्ठ अवं सर्वदा ज्ञानों को श्रीरामतत्त्व का उपदेश करने में तत्पर रहेंगे अवं श्रीगालवानन्दाचार्यज्जु के रूपमें जगद् प्रसिद्ध होंगे ।

चैत्रशुक्लद्वितीयायां शुके मेषेऽथ उर्षणे ।

यम अेव रमादासस्त्वान्ने प्रादुर्भविष्यति ॥ ४८ ॥

पालन वैष्णवाज्ञानां कुर्वन्नित्यमतन्द्रितः ।

धर्ममेवाग्ररत्नोके धर्माधीश उदारधीः ॥ ४९ ॥

अर्थ- श्रीयमराजज्जु चित्रा नक्षत्र उर्षण योग मेष लग्न में चैत्र शुक्ल द्वितीया शुक्लवार को श्रीरमादासज्जु के रूपमें अवतरित होंगे, वे उदार बुद्धिवाले श्रीरमादासज्जु अति सावधानी से आलस्य रहित होकर श्रीवैष्णवाचार्य गुरुदेव जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु की आज्ञाओं का पालन करते हुये सर्वेश श्रीरामज्जु की आराधना तथा श्रीवैष्णवधर्म पालन अवं सन्तों की आराधना कर श्रीरमादास-रैदास या रविदासज्जु आदि नामों से संसार में प्रसिद्ध होंगे ।

चैत्र शुक्लत्रयोदश्यां गुरौ कर्के ध्रुवान्विते ।

उत्तराङ्गाव्युनी संज्ञे जाता पद्मावती सती ॥ ५० ॥

श्रीमदाचार्यसन्निष्ठा सा पद्मवापरा सदा ।

धर्मज्ञा धर्मनिरता गुरुभक्ति परायणा ॥ ५१ ॥

अर्थ- उत्तरा झाल्गुनी नक्षत्र ध्रुवयोग कर्क लग्न में चैत्रशुक्ल त्रयोदशी गुरुवार को श्रीपद्मावतींजु अब तरित डोंगी, वे जगदाचार्यश्री में दृढनिष्ठा वाली धर्मतत्त्व को जानने वाली श्रीवैष्णवधर्म में सर्वदा तत्पर अवं सर्वदा गुरुभक्ति परायणता के कारण दूसरी पद्मांजु के समान प्रसिद्ध डोंगी ।

अवमेतादृशैस्तैस्तैः शिष्यैर्द्रादशभिर्मडान् ।

शोभिष्यत्यर्थितोद्वेयापदावव्या य सन्ततम् ॥ ५२ ॥

अर्थ- इस प्रकार ब्रह्मा आदि देवों से उत्पन्न उन-उन श्री अनन्तानन्दाचार्यंजु आदि बारह मडाभागवतों अवं श्रीपद्मावतींजु आदि अन्य अनेक साधक श्रीवैष्णव समुदाय से सर्वदा पूजित सेवित डोकर श्रीसम्प्रदाय के मडान प्रधान आचार्य जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यंजु सतत शोभित डोंगे ।

श्रीमानाचार्यवर्योऽयं रामानन्दो मडामतिः ।

शिष्योपशिष्यैरन्यैश्च शोभितोऽडर्दिवं भुवि ॥ ५३ ॥

अर्थ- मडान् भुद्धि वाले श्रीमान् स्वामी रामानन्दाचार्यंजु जो कि सभी आचार्यों में श्रेष्ठ हैं पृथ्वी पर शिष्यों अवं उप-शिष्यों तथा अन्यों के साथ दिन-रात शोभित डोंगे ।

पूज्यो ध्येयश्च जगतां रामरूपो जगद्गुरुः ।

उत्तुः कल्याणमार्गस्य शुभदोऽज्ञानदोऽनिशम् ॥ ५४ ॥

अर्थ- “रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो मडीतले” इस वैश्वानरसंछिता के वयनानुसार साक्षात् श्रीरामंजु के अवतार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यंजु सर्वेश श्रीरामचन्द्रंजु के समान ही कल्याण मार्ग सायुज्य मुक्ति के कारण अवं निरन्तर शुभद-वेद वेदान्तादि का आनन्दभाष्यों द्वारा तत्त्वज्ञान के उपदेश देनेवाले और संसार में साधकों के ध्येय ज्ञेय अवं पूज्य के रूपमें प्रसिद्ध डोंगे ।

यस्य दर्शनमात्रेण स्मरणेन सदा क्षितौ ।

नाम व्याडरणाद्धीना नरा मुक्ता न संशयः ॥ ५५ ॥

अर्थ- इस पृथ्वी में उन श्रीरामरूप जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यंजु का सदा दर्शनमात्र से या स्मरण मात्र से अथवा नाम लेने मात्र से डीन-पापाचार परायण मनुष्यवर्ग मुक्त डो जायेंगे इसमें संशय का स्थान नहीं ।

यदीयमतमालम्ब्य मन्त्रमन्त्रार्थभूषितम् ।

भूष्यते भूरियं लोके रंजितैर्मुनिवृत्तिभिः ॥ ५६ ॥

अर्थ- जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यंजु से प्रचारित-प्रसारित सनातन वैदिक विशिष्टाद्वैत मत जो कि वेद मन्त्रों अवं वास्तविक मन्त्रार्थों से विभूषित है उसका आलम्बन-आश्रय लेकर मुनिवृत्ति वास्तविक तत्त्वों के मननशील आचरण वालों से सुशोभित लोको से यह भारत भूमि भूषित डोगी ।

शरयन्द्रायते लोके डीर्तिर्यस्य मडात्मनः ।

विशदा पावनी पुण्या श्रृण्वतां पापनाशिनी ॥ ५७ ॥

अर्थ- उन मडामना जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु की सारे संसार को धवलित कर देनेवाली पापों का नाश करनेवाली अति उज्ज्वल पवित्र कीर्ति श्रवण करने वालों के पापों का नाश करेगी अवं शरद काल के यन्द्रमा के समान सली को आनन्द देनेवाली होगी ।

उरिभक्तिप्रदा नृणां तथा ज्ञानप्रकाशिनी ।

मोडान्धकारसङ्घप्रध्वंसिनी शुभदायिनी ॥ ५८ ॥

अर्थ- अवं वड आचार्य श्री की कीर्ति साधक मनुष्यों को श्रीरामयन्द्रज्जु की भक्ति को प्रदान करनेवाली तथा ज्ञान का प्रकाश करनेवाली अवं मोडरूप अन्धकार के समूड को समूल नाश करनेवाली और कल्याण को प्रदान करनेवाली होगी ।

स अेष भगवद्रूपो धर्मो विग्रहवानिव ।

द्विषतानिड दुर्धर्षः सेवनीयः सतां सदा ॥ ५९ ॥

अर्थ- 'तमकाञ्चनसंकाशो रामानन्दः स्वयं हरिः' "पारं कर्तुं छि धर्मात्मा रामानन्दः स्वयं स्वभूः" "रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो मडीतले" इत्यादि वैश्वानर पाञ्चरात्रागम से बोधित एस भूमण्डल में प्रख्यात साक्षात् श्रीरामज्जु के अवतार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु हैं अतः वे "रामो विग्रहवान् धर्मः" सर्वेश्वर श्रीरामज्जु साक्षात् धर्म शरीर वाले हैं यानी धर्म ही श्रीरामज्जु का श्री विग्रह-शरीर है, एस मडर्षि वयनानुसार धर्म विग्रह रूप श्रीरामज्जु के अवतार जगदाचार्यज्जु भी धर्म विग्रह शरीर वाले ही हैं अतः श्रीदशरथनन्दनज्जु के समान भगवान श्री आनन्दभाष्यकार भी एस संसार में अनादि वैदिक विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त विरोधियों के लिये दुर्धर्ष अदम्य अपराजित अवं सद्धर्म सत्कर्म साधनानन्य सज्जन पुरुषों के लिये सदा सेवनीयतया प्रसिद्ध होंगे ।

तज्जन्ममासर्क्षतिथौ तदीयैस्तदीयजन्मोत्सवमुत्सवोत्सुकैः ।

विधेयमेवमप्रतिवर्षमुत्तमंविधानविज्ञैर्विधिना छि वैष्णवैः ॥ ६० ॥

अर्थ- 'आचार्यदेवोभव' एस वेद वयन के अनुसार अपने आराध्य छष्ट देव के समान ही अपने सम्प्रदाय के प्रधान आचार्यज्जु का प्राकट्योत्सव विशेष समारोह के साथ मनाने का शास्त्रीय विधान है अतः श्रीवैष्णवों को श्रीआनन्दभाष्यकारज्जु की अवतार तिथि माघकृष्ण सप्तमी को आचार्यज्जु का अवतारोत्सव विशेष उत्साह के साथ पूजाविधि में निपुण श्रीवैष्णव से सविधि पूजा सम्पादन करवा कर श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णवों को प्रति वर्ष जगदाचार्यश्री के अवतार मास पक्ष नक्षत्र युक्त तिथि के दिन उत्तम प्रकार से आचार्यज्जु का अवतारोत्सव सम्पन्न करना चाडिये ।

पूजोपडारैरुचिरैर्यथोचितं देवं समभ्यर्थ्यसशिष्यसङ्गम् ।

वाद्यैर्मृदङ्गादिभिश्चतैः परैर्नृत्यैस्तथागीतवरैः प्रसादयेत् ॥ ६१ ॥

अर्थ- आचार्य श्री की देशकालानुसार यथोपलब्ध पूजा के सामग्री से श्रीअनन्तानन्दाचार्यज्जु आदि बारड शिष्य समूहों के साथ आगे बताये विधि के अनुसार, भगवान आनन्दभाष्यकार ज्जु की पूजा करके मृदंग आदि अद्भुत

श्रेष्ठ वाद्यों शास्त्रीय मर्यादा युक्त नृत्य एवं आचार्य कीर्ति बोधन परक श्रेष्ठ गीत-श्लोक पाठ सुन्दर स्तुति आचार्यमण्डिभ्रस्तव के गानों से आचार्य श्री को प्रसन्न करें ।

तदीयजन्मोत्सवसत्कथाभिस्तत्तोषहेतुस्तुतिभिस्तथैव ।

अन्यैस्तदीयाचारितैप्रतादितिर्निस्तन्दिरेवऽगुरुभक्तिस्तत्परः ॥ ६२ ॥

अर्थ- जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी की आराधना में तत्पर श्रीवैष्णवों को निद्रा-आलस्य से रक्षित छोड़कर के भगवान श्रीआनन्दभाष्यकार जी के जन्म-अवतार सम्बन्धी सत्कथा से एवं आपके तोष के कारणभूत सुन्दर स्तुतियों से तथा आचार्य श्री से आचरित प्रतों के आचरण से और आचार्यजी से उपदिष्ट ज्ञान के श्रवण से एवं आपकी दिग्विजय यात्रा व तीर्थाटनादि की वार्ता के श्रवण से आचार्यश्री को सन्तुष्ट करें ।

एवं स कुर्वन् विधितस्तदर्थनं तत्तोषहेतुञ्च मण्डोत्सवं बुधः ।

निरालसोभक्तियुतोलभेतस्वाभीष्टसिद्धिं मलतीं न संशयः ॥ ६३ ॥

अर्थ- पूर्वोक्त विधान से आचार्यजी की आराधना करने वाला बुद्धिशाली आराधक भक्ति युत एवं आलस्य रक्षित छोड़कर के श्री आनन्दभाष्यकारजी का सन्तोष का हेतु उनकी सविधि अर्थना तथा मण्डोत्सव को करने से बड्ी अभिलषित सिद्धि को प्राप्त करवेगा इसमें संशय नहीं है ।

निशम्य तद्वाक्यमथोमहात्मनोमुनेः प्रवृष्टः कलशोद्भवस्य ।

मुनिःसुतीक्ष्णः ससुतीक्ष्णबुद्धिर्विधिञ्चप्रष्टा छि तदर्थनं पुनः ॥ ६४ ॥

अर्थ- कुम्भ से उद्भूत महात्मा आत्मा वाले मुनीश्वर श्रीअगस्त्यजी के पूर्वोक्त श्रीआचार्यजी के अवतार एवं पूजन सम्बन्धी वचनों को सुनने के बाद तीक्ष्ण बुद्धि वाले मुनी श्रीसुतीक्ष्णजी अति प्रसन्न हुये, अनन्तर जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के पूजा का विधान जानने के लिये विनम्रभाव से प्रश्न किये ।

एति श्रीमद् मूल अगस्त्यसंछितायामगस्त्यसुतीक्ष्णसंवादे भविष्यभाष्ये श्रीरामानन्दाचार्यावतारोपाख्यानं नाम द्वात्रिंशद्दुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३२ ॥

तृतीयोऽध्यायः

तज्जन्म पावनं पुण्यं कथितं परमं त्वया ।

तदर्थनविधिं मज्यं वक्तुमर्हस्यथाधुना ॥ १ ॥

अर्थ - श्रीअगस्त्यजी से श्रीसुतीक्ष्णजी सादर निवेदन करते हैं- हे मुनीश्वर ! आपने अनुग्रह करके, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का परम पवित्र एवं परम पुण्य को बड्ीने वाला अवतार सम्बन्धी कथा का वर्णन किया, अब उन आचार्यश्री के अर्थन पूजा की विधि को भी मुझ पर अनुकम्पा कर उपदेश करें ।

जगतामुपकर्ता त्वं दयालुर्धर्मताम्वरः ।

समत्प्यर्थ्य जना येनाचार्यं श्रेयः समाप्नुयुः ॥ २ ॥

अर्थ- कारण कि आप बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं तथा जगत् का उपकार करने वाले हैं एवं दयालु हैं इसलिये जिस विधान से आचार्य चरण की पूजा करके साधकजन श्रेयः सायुज्य मुक्ति को प्राप्त कर सकें उस विधान का उपदेश करें ।

श्रूयतामिति यामन्त्र्य कथयिष्यति कुम्भजः ।

अम्बुजं बन्तुलाकारं द्वादशदलसंयुतम् ॥ ३ ॥

सुव्यक्तं तैर्दलैर्व्यक्तैर्दशनीयं सुशोभनम् ।

तन्मध्ये कर्णिकायान्तु यन्त्रषट्कोणमालिभेत् ॥ ४ ॥

अर्थ- इसके बाद श्रीअंगस्त्यज्जे से सुतीक्ष्णज्जे से कडा कि अब आप उस विधि को सुनिये, पहले १२ दल वाला कमल गोलाकार बनावें । उन दलों को देखने योग्य एवं सुन्दर शोभायमान प्रकट करें (बनावें) उसके बीच में कर्णिका के उपर षट्कोण का यन्त्र लिपें ।

तत्राचार्यवरं देवं रामानन्दमुदारधीः ।

विन्यसेत् साङ्गमर्काम् तं दिव्यगुणशालिनम् ॥ ५ ॥

अर्थ- उदार बुद्धि वाले आचार्य श्री के पूजक व्यक्ति को उस कमल दल के मध्येस्थित छः कोण वाले यन्त्र के बीच में दया दक्षिण्यादि अनेक दिव्यगुणों से सुशोभित सूर्यदेव के समान प्रकाश वाले अंग श्रीअनन्तानन्दाचार्य ज्जे प्रभृति बारह शिष्यों के साथ आचार्य प्रवर दिव्य सर्वगुणगणों से अलंकृत जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जे को स्थापित करें ।

सपूर्वदृशमारभ्य दलेषु ङमशो न्यसेत् ।

अनन्तानन्दमुभ्यांस्तान् द्वादशादित्यसन्निभान् ॥ ६ ॥

अर्थ- आराधक पुरुष मध्य में आचार्यश्री को पधारने के बाद पूर्व दिशा के ङमानुसार बारह सूर्य के समान दिव्य तेज से लोकोपकारक मुख्य शिष्य श्रीअनन्तानन्दाचार्य ज्जे के साथ कमल के अंक अंक केशर पर अन्य ग्यारह शिष्यों को भी पधारवे ।

यन्त्रमेवं सुसम्पाद्य तदर्धनपरायणः ।

पूजयेत्तत्र तान्सर्वानर्धपाद्यादिभिर्वरैः ॥ ७ ॥

पूजोपहारैः सकलैर्भक्त्या परमयायुतः ।

अेकाग्रमानसो भूत्वा तमेव मनसा स्मरन् ॥ ८ ॥

अर्थ-पूर्व में वर्णित ङम से पूजा यन्त्र को अच्छी तरह से तैयार करके आराधना करने वाले व्यक्ति को परम भक्ति से युक्त होकर मनको अेकाग्र करके अपने आराध्य जगदाचार्य श्री के पूजन में तत्पर हो उन्हीं आचार्य श्री को मन से स्मरण करता हुआ उस यन्त्र में सभी द्वादश शिष्यों के सङ्गित श्री आनन्दभाष्यकार ज्जे का सम्पूर्ण पाद्य अर्घ्य आदि श्रेष्ठ षोडशोपचार साधनों १- आवाहन २-आसन ३-पाद्य ४-अर्घ्य ५- आचमनीय ६-स्नान ७-वस्त्र

૮-ચણોપવીત ૯ ગન્ધ ૧૦-પુષ્પ ૧૧-ધૂપ ૧૨-દીપ ૧૩-નૈવેદ્ય ૧૪-નિરાજ ૧૫ પુષ્પાઞ્જલિ ૧૬-પ્રદક્ષિણા નમસ્કારોં સે પૂજન કરના ચાહિયે ।

નમઃ આચાર્યવર્યાય રામાનન્દાય ધીમતે ।

મોક્ષમાર્ગપ્રકાશાય ચતુર્વર્ગ પ્રદાય ચ ॥ ૯ ॥

અર્થ- અનન્તર પૂજક કો સભી આચાર્યોં મેં શ્રેષ્ઠ, બુદ્ધિશાલી એવં સાયુજ્ય મોક્ષ કે માર્ગ કો પ્રકાશિત કરનેવાલે તથા ધર્મ અર્થ કામ એવં સાયુજ્ય મોક્ષરૂપ ચારોં પુરુષાર્થોં કો પ્રદાન કરને વાલે શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી કો સાદર નમસ્કાર હૈ ।

ઇતિમન્ત્રવિધાનેન સમર્થેદ્વિધિનાર્યકઃ ।

અર્ધપાદાદિભિસ્તૈસ્તૈર્ગન્ધપુષ્પાક્ષતૈઃ કૃલૈઃ ॥ ૧૦ ॥

નૈવેદ્યૈસ્તૈઃ શ્રેષ્ઠઃષડ્રસૈઃ સુમનોહરૈઃ ।

તામ્બુલૈર્દક્ષિણાભિસ્તં તોષયેન્નૃત્યગીતિભિઃ ॥ ૧૧ ॥

અર્થ- આચાર્યશ્રી કી આરાધના કરને વાલા સાધક ઊપર બતાયે અનુસાર “ઓં નમઃ આચાર્યવર્યાય શ્રીરામાનન્દાચાર્યાય” ઇસ મન્ત્ર સે પાદ્ય અર્ધ્ય ગન્ધ પુષ્પ અક્ષત ફલ છરસ યુક્ત મનોહર ઉત્તમ નૈવેદ્ય તામ્બુલ એવં દક્ષિણા આદિ ઉન ઉન ઉત્તમ સામગ્રિયોં સે સવિધિ ઉન જગદાચાર્ય શ્રી કા પૂજન કરે અનન્તર નૃત્ય ગાન સ્તુતિ કવચ પ્રભૃતિ કી પાઠ પ્રાર્થના આદિ સે ઉહેં સન્તુષ્ટ કરેં ।

એવં દલેષુ શિષ્યાંસ્તાન્ પૂજયેદમલાત્મના ।

પ્રણવાદિચતુર્થ્યન્તનામમન્ત્રૈર્વિધાનતઃ ॥ ૧૨ ॥

અર્થ- ઇસ પ્રકાર કમલ કે દલોં મેં સ્થિત ઉન સભી મહાત્માઓં કા પૂજન ચતુર્થાન્ત નામ રૂપ પ્રણવાદિ મન્ત્રોં સે વિધિ પૂર્વક પૂજા કરેં । જૈસે- (ઓં નમો અનન્તાનન્દાય) અથવા (અંઅનન્તાનન્દાય નમઃ) ।

સ્તુવીત સ્તુતિભિર્દેવં સશિષ્યં ભક્તિતત્પરઃ ।

જ્ઞાનવિજ્ઞાનદીપં તમુદારયશસં પ્રભુમ્ ॥ ૧૩ ॥

અર્થ-પૂજા વિધાન સમ્પન્ન હો જાને પર સાધક અતિ ભક્તિ ભાવના સે જ્ઞાન એવં વિજ્ઞાન કો પ્રકાશિત કરનેવાલે સર્વ સમર્થ દીપ સ્વરૂપ તથા ઉદાર હૃદય વાલે એવં યશસ્વી દેવ જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી કી સભી બારહ શિષ્યોં કી સ્તુતિ કરેં ।

જગદ્ગુરો નમસ્તેડસ્તુ હરયે વિશ્વબન્ધવે ।

મોક્ષમાર્ગપ્રકાશાય પ્રણતાર્તિહરાય તે ॥ ૧૪ ॥

અર્થ-હે જગત્ કે ગુરુજી ! હે સર્વપાપ કો હરણ કરને વાલે ! હે વિશ્વ કે હિત કરનેવાલે ! હે સાયુજ્ય મોક્ષ કે માર્ગ કા પ્રકાશક ! હે શરણ મેં આયે જીવોં કે દુઃખોં કા નાશ કરનેવાલે ! આપકો ઇસ સેવક કા નમસ્કાર-સાદર દણ્ડવત્ પ્રણામ હૈ, વહ સ્વીકાર કરેં ।

સ પાર્ષદાય સાડ્ગાય સદા પાવનકીર્તયે ।

नमस्तेऽगाधभोधाय प्रणताभीष्टदायिने ॥ १५ ॥

अर्थ- श्रीअनन्तानन्दाचार्यज्जु आदि पार्श्वदों तथा उपाचार्य द्वाराचार्य प्रभृति अंगों के साथ सदा विराजमान अ एवं लोगों को पवित्र करनेवाली कीर्ति वाले तथा अगाध तत्त्वभोध वाले और प्रणत-शरण में आये जनों को अभीष्ट पदार्थ देनेवाले हे अनन्त मडापुरुष ! आचार्य प्रवर ! आपको सादर नमस्कार है ।

सत्यव्रताय शान्ताय दान्ताय जगदात्मने ।

नमोऽनन्ताय मडते निर्जिताशेषविद्विषे ॥ १६ ॥

अर्थ- मन बुद्धि अडंकार अ एवं चित्त धन चारों को वश में रभकर साधना में व्यावृत्त शान्त स्वरूप अ एवं छन्दियों को वश में रभकर कार्यदक्ष तथा सत्य व्रत और जगत् के आत्मा स्वरूप अ एवं अनन्त रूपसे स्थित डोकर सर्वजन पूजनीयता को प्राप्त तथा सनातन श्रीवैष्णवधर्म के विरोधी समस्त व्यक्तियों को जितने वाले आनन्दभाष्यकार आचार्य श्री को अनेक भभर सादर नमन है ।

विधृतज्ञानमुद्राय योगिने योगशालिने ।

नमस्तेऽस्तु दयासिन्धो जगज्जन्मादिहेतवे ॥ १७ ॥

अर्थ- ज्ञानमुद्रा धारण कर योग साधना में तल्लीन अ एवं पारमार्थिक योग साधना से सुशोभित संसार के जन्म स्थिति अ एवं संडार के कारणरूप हे दया के समुद्र स्वरूप आचार्य प्रवर आपको सादर वन्दन है ।

भीमे भवाण्विडनन्यः शरणः पतितः प्रभो ।

पादपद्मद्वयं तेऽडं प्रजामि शरणं सदा ॥ १८ ॥

अर्थ- हे सर्वजनोद्धारण समर्थ आचार्य प्रवर ! मैं भयंकर संसार स्वरूप समुद्र में पडःा डुआ डूँ, मेरा आपको छोडः अन्य कोड भी रक्षक नडी है षसलिये मैं आपके श्रीचरणकमलों का शरण ग्रडण करता डूँ । शरणगत को सर्वदा के लिये अभय प्रदान करनेवाले प्रभो ! मेरी रक्षा करें ।

धृत्यभिष्टूय तं धीमान् दधात्पुष्पाञ्जलिं मुदा ।

प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ साष्टाङ्गं विधिवत्ततः ॥ १९ ॥

अर्थ- बुद्धिमान् साधक को पूर्वोक्त प्रकार से प्रसन्नता पूर्वक आचार्यश्री की स्तुति करके आचार्य श्री के श्रीचरणों में पुष्पाञ्जलि अर्पित करना चाडिये ।

अथजन्मकथान् तस्य श्रृणुयात् पापनाशिनीम् ।

गदतां श्रृण्वतामाशु विशदं तां शुभप्रदाम् ॥ २० ॥

अर्थ- आचार्य श्री को दण्डवत् प्रणाम करने के भाद कडने वाले अ एवं सुनने वाले दानों के डी पापों का नाश करनेवाली अ एवं शीघ्र डी शुभ डूलों को प्रदान करनेवाली जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु की विविध प्रकार की विशद् अवतार कथाओं को सावधान डोकर सुने ।

अ एवं मुने त्वं जानीडि तदर्थनविधिं मडत् ।

लोकैऽनेन विधानेन तमभ्यर्थ्यमडामुनीम् ॥ २१ ॥

प्राप्स्यन्ति य क्षितौलोकावास्थितार्थमसंशयम् ।

नरास्तद्भावनायुक्ताः प्रणताविशदाशयाः ॥ २२ ॥

अर्थ- हे मुनिज्ज ! जगदाचार्य श्री के मडान् पूजन विधि को पूर्वोक्त प्रकार से जानें, लोक में नम्र अर्थात् भक्ति भावयुक्त स्वच्छ अन्तःकरण वाले साधकजन पूर्व वर्णित विधान के अनुसार उन मडापुरुष श्रीरामरूप श्रीरामानन्दाचार्यज्ज का पूजन कर अभिवाञ्छित फल को प्राप्त करेंगे इसमें संशय नहीं है ।

मुने स भगवानित्थं सुतीक्ष्ण जगदीश्वरः ।

सत्यसन्धोऽरिर्जतो विधास्यति शुभं नृणाम् ॥ २३ ॥

अर्थ- हे सुतीक्ष्ण मुनिज्ज ! सत्य प्रतिष्ठा वाले भक्तों के दुःखों को अपहरण करने वाले जगदीश्वर वे भगवान् श्रीरामज्ज पूर्व कथित प्रकार से पार्श्वों के साथ अवतार लेकर संसार के मनुष्यों का कल्याण करेंगे ।

यार्वाकादिमताद्गढान् वडुधादुर्मतीन् कलौ ।

करिष्यति नरान् जित्वा रामभक्तिपरायणान् ॥ २४ ॥

अर्थ- वे आचार्य श्री कलियुग के प्रताप से पथ भ्रष्टजनों को कलियुग में भी यार्वाक, बौध आदि नास्तिक मत में स्थित दुर्मति वाले जनों को शास्त्रार्थ से सत् युक्ति से मन्त्र शक्ति से - सिद्धि यमत्कृति आदि अनेक उपायों से जितकर सनातन श्रीवैष्णव धर्मानुकूल करके उन सभी को श्रीरामभक्ति परायण कर देंगे ।

यत्प्रतापवशादेवभविष्यन्ति कलौनराः ।

धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाभोक्षमार्गरताः सदा ॥ २५ ॥

अर्थ-भयावड कलियुग में भी उन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्ज के प्रबल प्रताप के कारण नर सदा धर्मनिष्ठ तपनिष्ठ अर्थात् सायुज्य भोक्ष के मार्ग में निरत होंगे ।

तस्मिन् महीतलं याते नृणां किं वर्णयाम्यडम् ।

भाग्यं साक्षाद्भरौप्रीतेसख्यिदानन्दविग्रडे ॥ २६ ॥

अर्थ- मुनीश्वर सुतीक्ष्ण ! सत् चित् अर्थात् आनन्द विग्रह वाले भक्तों के दुःखों को हरण करनेवाले साक्षात् श्रीरामचन्द्रज्ज के पृथिवी में श्रीरामानन्दाचार्यज्ज के रूपमें अवतरित होने पर मनुष्यों के भाग्य का वर्णन मैं क्या करूँ अर्थात् साधक जनों ने वर्णनातीत आनन्द का अनुभव किया ।

धन्यास्तदातन्मुष्पडुजं नरा द्रक्ष्यन्ति ये तापहरं य पश्यताम् ।

श्रोष्यन्ति वारं परमामृतायनां ते भूरिभाग्या वत निर्मलाशयाः ॥ २७ ॥

अर्थ- श्रीसुतीक्ष्णज्ज ! जो दर्शन करने वाले मनुष्यों के दैहिक दैविक अर्थात् भौतिक तीनों तापों को दूर करने वाले जगदाचार्य श्री के मुष्पडुप कमल का अवलोकन करेंगे वे धन्य हैं तथा जो अति निर्मल अन्तःकरण वाले आचार्य श्री के अमृत के समान सुषुप्तायक श्रीवचनामृतों का श्रवण करेंगे वे भी बड्े भाग्यशाली हैं ।

एति श्रीमद् मूल अगस्त्यसंछितायां सुतीक्ष्णागस्त्य संवादे, भविष्यपुत्रे सांग सशिष्य श्रीरामानन्दाचार्य यन्त्रार्थनप्रकारोनाम त्रयत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः

शिष्यैर्द्वादशभिः श्रीमानथैतैरर्कसन्निभैः ।

सूर्यैर्द्वादशभिर्नित्यं यथा विष्णुः प्रतापवान् ॥ १ ॥

विराजमानः सततं पर्यटन्नवनीमिमाम् ।

द्वारकादिषु तीर्थेषु तत्र तत्र जगद्गुरुः ॥ २ ॥

अर्थ- अनन्तर अपने अवतार के उद्देश्यो-अनादि वैदिक विशिष्टाद्वैतमत रूप धर्मसंस्थापनार्थ तीर्थाटन को निमित्त बनाकर श्रीद्वारका-विश्रामद्वारका श्रीरामेश्वर श्रीजगन्नाथपुरी श्रीबद्रीनाथ प्रभृति सभी तीर्थों में जिसप्रकार बारह सूर्यों के साथ अति प्रताप वाले श्रीविष्णु भगवान् शोभित होते हैं उसीप्रकार बारह सूर्य के समान अति प्रतापशाली द्वादश शिष्यों के साथ विराजमान होकर यतिराज जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी सर्वदा उन उन प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सभी भारतीय तीर्थस्थानों में भ्रमण करेंगे ।

विद्विषां जित्वरो वाटैः श्रुतिस्मृतिसमुत्थितैः ।

विपरितान् वशीकुर्वन् कुर्वन् शिष्यांश्च तानथ ॥ ३ ॥

अर्थ- विशिष्टाद्वैतमतवाद् विरोधी आदि शत्रुओं को श्रुतिस्मृति धृतिडास आदि सत् शास्त्र एवं सत् तर्क तथा सत् युक्तियों से पराजित करते एवं विपरितायरण वेद मार्ग विरुद्ध आयरण वाले जैन बौद्ध शाक्त प्रभृतियों को सत् वादों से वश में कर उन्हें शिष्य बनाकर सनातन श्रीवैष्णवधर्म में प्रवर्तन करते हुये समस्त भारतवर्ष में परिभ्रमण करेंगे ।

षडक्षरं मन्त्रराजं तेभ्यश्चोपदिशन् मुनिः ।

मन्त्रार्थं श्रावयन्नित्यं मन्त्रज्ञैस्तरुपासितः ॥ ४ ॥

अर्थ- जडाञ्च-तडाञ्च स्वशरणापन्न जनों को षडक्षर मन्त्रराज श्रीराम मडामन्त्र का उपदेश करते हुये श्रीराम मडामन्त्र के तत्त्वों को जानने वाले साधकों से उपासित-सेवित होकर उन जिज्ञासुओं को श्रीराममन्त्रों के अर्थों तात्पर्यार्थ रडस्यार्थ आदि को उपदेश करते हुये भ्रमण करेंगे ।

आसमुद्रं यतुर्दिक्षु विचरन् धर्मतत्परः ।

कर्ता वै बहुधा लोके रामाभिरतमुत्तमम् ॥ ५ ॥

अर्थ- श्रीवैष्णवधर्म यक स्थापन में संलग्न जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी पूर्व पश्चिम उत्तर एवं दक्षिण में समुद्र पर्यन्त यारों दिशाओं में परिभ्रमण करते हुये अनेक शस्त्र शास्त्र तथा उपदेश आदि अनेक प्रकार से लोगों को सर्वतोभावे से श्रीरामयन्त्रजी के प्रति विशिष्ट अनुराग वाले बनायेंगे ।

लेष्यन्ति नास्तिकास्तस्य प्रतापहततेजसः ।

तमोपडे यथासूर्योऽभ्युदिते तारकागणः ॥ ६ ॥

अर्थ- उन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के प्रताप से नष्टतेज डोकर नास्तिक लोग उसी तरल नष्ट शक्ति डोकर छिप जायेंगे जैसे तम को नाश करनेवाले सूर्यदेव के उदित होने पर तारागाण नष्ट तेज डोकर छिप जाते हैं ।

अेवमेवात्र सुतीक्ष्ण विचरन् सर्वतो मुनिः ।

श्रेयः सम्पाद्यन् नृणां उरत्रज्ञानजं तमः ॥ ७ ॥

राजिष्यते स्वयं स्वीयैर्मानुभिर्मानुमान्निव ।

असङ्घ्येयैर्गुणैः शुभ्रैर्जगत्यालनतत्परः ॥ ८ ॥

अर्थ- मुनीश्वर सुतीक्ष्ण ! पूर्व वर्णित कम से संसार को धार्मिक रूपसे पालन-पोषण में तत्पर श्रीरामतत्त्व मननशील जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी आर्यवर्त में सर्वत्र भ्रमण करते मनुष्यों के कल्याण रूप लक्ष्य का सम्पादन करते हुये अेवं उनके अज्ञान रूप अन्धकार का उरण करते हुये जिस प्रकार सूर्यदेव अपनी किरणों से शोभित होते हैं उसी प्रकार अपने ही अनन्त निर्मल दया दक्षिण्यादि निर्मल अेवं श्रीअनन्तानन्दाचार्यादि गुण-स्वभाव वाले शिष्यवर्गों से प्रकाशित होंगे ।

प्रकृत्याशीलसम्पन्नो दयारत्नकरो मडान् ।

धर्मत्राणाय लोकेऽस्मिन्वतीर्णः परः पुमान् ॥ ९ ॥

अर्थ- वे प्रकृति-स्वभाव से ही शील से युक्त दया के समुद्र सर्व व्यापक परम पुरुष श्रीरामजी ही “रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो मडीतले” इस आगम वचन के अनुसार श्रीरामानन्दाचार्यजी के रूपमें “यदा यदा छि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः । आभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्” इस प्रतिज्ञा वचन के अनुसार श्रीवैष्णवधर्म संरक्षणार्थ इस भारत वसुन्धरा में अवतरित हुये हैं ।

मडाप्रतधरो धीमान् सर्वविधाविशारदः ।

निस्पृहः सर्वकामेभ्यः स्वात्मारामोमडामुनिः ॥ १० ॥

अर्थ- वे विशिष्ट बुद्धिशाली सभी विधाओं में पारंगत अेवं सर्वदा श्रीरामजी की सेवारूप मडान् व्रत को धारण करने और सभी लौकिक कामनाओं से निस्पृह तथा केवल स्वात्मा चिन्तन अेवं परमात्मा रूपतत्त्व चिन्तन में ही मग्न रहने वाले मडामुनि श्रीरामानन्दाचार्यजी इस भूतल में स्वयं प्रसिद्ध होंगे ।

रामानन्द उदारकीर्तिरतुलः श्रीयोगिवर्याग्राणीः पाण्डुद्रविभेदनाशनिरुद्धो धर्माभिसम्बर्धनः ।

श्रीमान् द्विव्यगुणालयोनिजयशः स्तोमाङ्कितक्षमातलः सिद्धध्येयपदाम्बुजोविजयतेऽज्ञानान्धकारापडः ॥ ११ ॥

अर्थ- अनुपम उदार कीर्ति वाले साधनारत योगियों में श्रेष्ठ अेवं पाण्डु रूप पर्वतों के विदारण करने में अज के समान और सारे संसार में श्रीवैष्णवधर्म का विस्तार करने वाले तथा दया दक्षिण्य शौशिल्य आदि अनेक द्विव्यगुणों के आधार स्थान और अपने शुभ यश समूह से पृथिवी को अलङ्कृत करने वाले तथा जिन आचार्यश्री के यरणकमलों का ध्यान सिद्ध साधक पुरुषवर्ग किया करते हैं और अज्ञान रूप अन्धकार को तत्त्व ज्ञानोपदेश से नाश करनेवाले हैं अैसे जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी सर्वोत्कृष्ट रूपसे विराजमान हैं ।

वेदार्थसम्पादकसम्भुभाम्बुजस्त्रितापसंडारकथारुलोचनः ।

भवाम्बिसन्तारकपाद्यपङ्कजोनिजेष्टपूर्वार्पितकल्पपाद्यः ॥ १२ ॥

अर्थ- जिन आचार्य श्री का मनोहारी मुभरुप कमल वेद अवं वेदान्त आदि शास्त्रों के वास्तविक अर्थ को सम्पादन विवेचन द्वारा लोगों को समझाने वाला है अवं जिनके आकर्षक नेत्र दैहिक दैविक तथा भौतिक तीनों तारों को डराने करने वाले हैं और जिन आचार्य श्री के श्रीरररकमल शरराङ्गजनों को संसाररुप समुद्र से सदा के लिये पार उतार देनेवाले हैं अवं जिन्होंने ज्यों के छिछित कल सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति के लिये तारक षडक्षर श्रीराम मडामन्त्र रुप कल्पवृक्ष सभा को प्रदान किया-सुलभ कराया जैसे सर्वजनों के उद्धारक आचार्य जो सर्वतोभाव से विजयी हों ।

विधूतशत्रुधुविमान् धरातलं यशस्समूढैर्विदधत् सुनिर्मलम् ।

प्रकाशमानात्मविभूतिभूषितःप्रभूतविद्याप्रभवःप्रभाववान् ॥ १३ ॥

अर्थ- धैर्यशाली अवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त किये डुये और स्वयश समूह से धरातल को अति निर्मल करनेवाले अवं प्रकाशमान और अलिमा मडिमा आदि आठों अश्रयों से विभूषित तथा विशेष प्रभाव वाले और अनेक विद्याओं के उत्पत्ति के स्थान जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजो सर्वोत्कर्ष रुपसे विराजमान हों ।

प्रतापसन्तापितशत्रुमण्डलःसुसद्यशोऽलङ्कृतभूमिमाण्डलः ।

समीडिताशेषजगत्सुमङ्गलःसदर्थनीयोऽभिलमङ्गलायनः ॥ १४ ॥

अर्थ- अपने प्रयाण प्रताप से शत्रु को सन्तापित करनेवाले अवं अपने सुयश से भूमण्डल को विभूषित करनेवाले तथा सम्पूर्ण संसार का मंगल करनेवाले अवं सत्पुरुषों से समाराधनीय और सम्पूर्ण मंगल-कल्याण के आधारभूत जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजो सर्वोत्कर्ष रुपसे विराजमान हों ।

सत्सम्प्रदायाम्बुजभास्करोऽग्रणीविनीतनीताभिलवाञ्छितार्थकः ।

निगूढवेदार्थविदीपनस्तैरुदारवृत्तैर्मंडितो मडात्मभिः ॥ १५ ॥

अर्थ- सत् अनादि वैदिक श्रीसम्प्रदाय रुप कमल को प्रकाशित करने वाले सूर्य स्वरुप अवं अति श्रेष्ठ और विनय सम्पन्न साधकों से प्राप्तव्य समस्त पदार्थों से समलंकृत अवं उन्हे प्रदान करनेवाले तथा अति निगूढ-गहन वेदों के अर्थों को अलमसूत्र उपनिषद् तथा गीता षन प्रस्थानत्रयों के आनन्दभाष्यों तथा श्रीवैष्णवमताञ्जभास्कर प्रभूति मडाप्रभ्यों के व्याख्यान प्रवचन द्वारा प्रकाशित करनेवाले और अति उदार आचरण वाले तथा उदार यरित मडात्माओं से पूजित जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजो सदा विजयी हों ।

गुणेन शीलेन श्रुतेन कर्मणा प्रकाशमानः किरणैर्यथारविः ।

डरंस्तमो नैशमुदारदीधितिर्विनिर्जिताशेषसापन्नसंडतिः ॥ १६ ॥

अर्थ- जैसे सूर्यदेव अपने असाधारण असंख्य किरणों से दिशा के घोर अन्धकार को नाश कर प्रकाशमान् होते हैं उसी तरह दया दाक्षिण्यादि गुणशील अवं सर्वशास्त्र पारंगतता तथा तदनुरुप कर्मों के आचरण रुप किरणों से शास्त्र विरुद्धाचरण जनित अन्धकार रुप सभा शत्रुओं को जोतकर आचार्य श्री संसार में प्रकाशित होंगे ।

करोतुनोऽदभ्रद्योधिमङ्गलं सपार्षदो दर्शितभूर्यनुग्रहः ।

गृहीतधर्मयतना कृतिः कृतीकृतार्थयत्नोऽकमिमं यराचरम् ॥ १७ ॥

अर्थ- श्रीवैष्णवधर्म मर्यादानुरूप श्रीवैष्णव संन्यासाश्रम धर्म को ग्राहण कर त्रिदण्ड अथवा काषाय वस्त्र से मण्डित श्रीविग्रह वाले परम ध्यायु डे आचार्यज्जु! आप यराचर ढस लोक को कृतार्थ करते डुये डारड पार्षदीं डे साथ डडारे डी ढस्थित पदार्थ को प्रदडन करे यानी डडे डी डंगलरूप सायुज्य डुकुत प्रदडन करे ।

उपप्लुतन्धर्मविरोधिभिर्जगत्सनाथमाद्योविदधत्पानिधिः ।

विदधत्सुरस्याधनिवर्णयशस्तनोतुनोऽजस्त्रमसौसुमङ्गलम् ॥ १८ ॥

अर्थ- श्रीड्रडडड अथवा श्रीशंकरज्जु प्रडृति डेवों डे डी आडि कारण रूड अथवा कृपा डे समुद्र सनातन धर्म विरोधियों से पीडित ढस संसार को सनाथ कर, पीडित से डुकुत करनेडाले अथवा ढस संसार डे डैले पापाथार को नाश करनेडाले संसार डे प्रसिद्ध जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य ज्जु स्तुति करने डाले डड डडों डे सुडंगलकारी यश को सर्वड विस्तारित करे ।

जगत्प्रतीपानभितोनिरस्ययश्चकार धर्माभिरतं सतां प्रभुः ।

अशेषसत्पूजितपादपङ्कजः सुमङ्गलं नो वितनोतु सर्वड ॥ १९ ॥

अर्थ- जिन सर्वसमर्थ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु ने जगत् डे सनातनधर्म विरुद्ध आथरण करनेडालों को सडी तरड से निरस्तकर, सज्जनों से समाथरित श्रीवैष्णवधर्म डे अडिरत-श्रीवैष्णव धर्माथरणशील डिये, वे समस्त सत् पुरुषों से सड पूजित थरणकडल डाले श्री आचार्य स्तुति करने डाले डडसड की अडीष्ट सायुज्य डुकुतिरूप सिद्धि को प्रदडन करे ।

ढति श्रीडड डूल अगस्त्यसंखितायां डविष्यडण्डे श्रीरामानन्दाचार्य द्दिग्विजयवर्णनं नाम यत्स्त्रिंशद्दुत्तरशततडोऽध्यायः ॥ १३४ ॥

पञ्चडोऽध्यायः

रामानन्डड वन्दे योगिधेयाडृष्टिपङ्कजम् ।

उडारयशसं डेवं शान्तडूर्ति शुडप्रदडम् ॥ १ ॥

अर्थ- योगियों डे ध्यान करने योग्य श्रीथरणकडल डाले अथवा उडार विस्तृत यश डाले तथा डव्याण प्रदडन करने डाले शान्त स्वरूप और डेदिव्यडान शरीर डाले प्रस्थानत्रयानन्डडडडकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु को वन्दना साडर डण्डवत् प्रणाम करता डूँ ।

अष्टोत्तरशतं वक्ष्ये नाम्नां यस्य डडडतडनः ।

यैरिज्यडानो डगवडन् डडडनाशु प्रदडस्यति ॥ २ ॥

अर्थ- डडडि श्रीअगस्त्यज्जु श्रीसुतीक्ष्णज्जु से डडते डूँ- डे सुतीक्ष्णज्जु ! अड डे डडडन आत्मा उन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यज्जु डे अष्टोत्तरशत (अडसौ आड) नामों को डडता डूँ उसे सावधानतया सुडे, जिन नामों से पूजा करने पर डगवडन् श्रीरामानन्दाचार्य ज्जु पूजक डे डडडनाओं को शीघ्र पूर्ण करेगे ।

पठतां पठितैर्ध्यातैर्ध्यायितां श्रृण्वतां श्रुतैः ।

शुभप्रदैः सतां ग्राह्यैर्महापापप्रणाशनैः ॥ ३ ॥

अर्थ- वे आचार्य श्री के अेकसौ आठ नाम सत् पुरुषों के ग्राहण करने योग्य हैं अेवं महापापों के समूह का नाश करनेवाले और कल्याण प्रद हैं । तथैव उन दिव्य नामों का ध्यान करने से ध्यान करने वाले तथा श्रद्धा से सुनने से सुनने वाले और पठन करने से पठन करने वाले की सभी कामनाओं को जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यशु पूर्ण कर देंगे ।

रामानन्दोरामरूपो राममन्त्रार्थवित्कविः ।

राममन्त्रप्रदीपरम्यो राममन्त्रस्तः प्रभुः ॥ ४ ॥

अर्थ- रामानन्दः-श्रीरामतत्त्वों के अनुसन्धान से आनन्द का अनुभव करने अेवं कराने वाले । राममन्त्रार्थवित्-श्रीरामशु के सभी मन्त्रों के वास्तविक अर्थों को जानने वाले । कविः-सर्वदा वेदादि शास्त्रों का विचार करनेवाले । राममन्त्रप्रदः- तारक षडक्षर श्रीरामशु के मन्त्रों को लोकोपकारार्थ शरणागतों को देनेवाले । रम्यः- अतिरमणीय स्वरूप वाले । राममन्त्ररतः- सर्वेश्वर श्रीरामशु के मन्त्रों के चिन्तन में ही सदा तल्लीन रहने वाले । प्रभुः-निग्राह अेवं अनुग्राह में समर्थ सभी को नियन्त्रण करने वाले ।

योगिवर्यो योगगम्योयोगज्ञोयोगसाधनः ।

योगिसेव्यो योगनिष्ठोयोगात्मायोगरूपधृक् ॥ ५ ॥

अर्थ-योगिवर्यः- योगियों में श्रेष्ठ । योगगम्यः- योग के द्वारा जाने जाने वाले । योगज्ञः- योग को जानने वाले । योगसाधनः सदा योग साधना करने वाले । योगिसेव्यः- योगिजनों से सेवित-सेवा करने योग्य । योगनिष्ठः- योग में सदास्थिर रहने वाले । योगात्माः योग के आत्मातत्त्व स्वरूप । योगरूपधृक्ः योग के लक्ष्यभूत तत्त्व स्वरूप को धारण करनेवाले ।

सुशान्त शास्त्रकृत् शास्ता शत्रुजिच्छान्तिरूपधृक् ।

समयज्ञः शमी शुद्धः शुद्धधीः शुद्धवेषधृक् ॥ ६ ॥

अर्थ-सुशान्तः-अति शान्त रूप वाले । शास्त्रकृत्ः-उपनिषदों गीता अेवं ब्रह्मसूत्र में आनन्दभाष्य अेवं श्रीवैष्णवमताभ्जभास्कर प्रभृति सर्वोत्कृष्ट शास्त्रों का निर्माण करने वाले । शास्ताः-अधर्माचरण वालों को शासित कर सन्मार्ग में लगाने वाले । शत्रुजित्ः-काम कोष लोभ मोह मद अेवं मात्सर्य रूप शत्रु या वेद मार्ग विरुद्धाचरण वाले नास्तिकरूप शत्रुओं को श्रुतने वाले । शान्तिरूपधृक्ः-शान्ति स्वरूप को धारण करने वाले । समयज्ञः-पूजा आराधना मान अपमान में समान रूपसे रहने वाले । शमीः-छन्द्रीय संयमनशील सभी छन्द्रीयों को वश में रखनेवाले । शुद्धः- पवित्र अन्तःकरण वाले । शुद्धधीः-विशुद्ध बुद्धि वाले । शुद्धवेषधृक्ः-आगमादि धर्मशास्त्र सम्मत विशुद्ध काषाय परिधान को धारण करने वाले ।

महान् महामतिर्मान्यो वदान्यो भीमदर्शनः ।

भयदृष्टभयदृष्टभर्ता भव्योभवभयापहः ॥ ७ ॥

अर्थ- मछानुःसर्वोत्कृष्ट स्वरूप वाले । मछामतिः- मछाभुद्धिशाली । मान्यः- सर्वमाननीय व्यक्तित्व वाले । वदान्यः- उदार ध्यालु सर्वदा तत्त्वज्ञान दान कार्यो में संलग्न रहने वाले । लीमदर्शनः- असत् आचरण वालों के वास्ते भयानक दर्शन वाले । भयदृष्टः शरण में आये साधकों के भय को सदा के लिये उरण कर निर्भय करने वाले । भयदृष्टः श्रीवैष्णवधर्म विरुद्ध सनातन धर्मविरुद्ध आचरण वालों को भय प्रदान करने वाले । भर्ताः शरणापन्न साधकों का भरण पोषण करने वाले । भव्यः- अति दिव्य दृष्टिमान स्वरूप वाले । भवभयापहः- जन्म मृत्युरूप संसार के भय को अपहरण करने वाले ।

भगवान् भूतिदोभोक्ता भूतेज्योभूतभृद्भिः ।

ज्ञातज्ञेयोऽतिगम्भीरो गुरुज्ञानप्रदो वशी ॥ ८ ॥

अर्थ- भगवान्- उत्पत्ति प्रलय अगति गति विद्या अवेव अविद्यारूप छः प्रकार के अश्रयों से सम्पन्न । भूतिदः- अश्रयों को देनेवाले । भोक्ताः शरणापन्नजनों के कष्टों को अनुग्रह रूपसे उरणरूपतया भोग करने वाले । भूतेज्यः- सभी प्राणियों से पूजनीय । भूतभृत्ः भूतों प्राणिवर्गों का भरण पोषण करने वाले । विभुः- सर्वव्यापक । ज्ञातज्ञेयः- जानने योग्य श्रीरामतत्त्व के पूर्णज्ञान वाले । अतिगम्भीरः- अति गम्भीर विपत्ति में ली विखलित न होने वाले धीर । गुरुः- लोगों के अज्ञान रूप अन्धकार को दूर कर उन्हें ज्ञानरूप प्रकाश को प्रदान करनेवाले । ज्ञानप्रदः- श्रीरामतत्त्वरूप मोक्ष साधनभूत परम ज्ञान को देनेवाले । वशीः- अपने इन्द्रिय संकुल को नियन्त्रित कर शास्त्रों की आज्ञा के वश में रहने वाले ।

अमोघोऽमोघदृग्दान्तोऽमोघभक्तिरमोघवाक् ।

सत्यः सत्यव्रतः सभ्यः सत्प्रियः सत्यरायणः ॥ ९ ॥

अर्थ- अमोघः- अयूक निष्कल न होने वाले । अमोघदृक्ः- सङ्कल दृष्टि वाले । दान्तः- सर्व इन्द्रियों को वश में रखने वाले । अमोघभक्तिः- सङ्कल भक्ति वाले । अमोघवाक्ः- सभी प्रकारों से सङ्कल वाणी वाले । सत्यः- सत्य व्रत सत्य स्वरूप । सत्यव्रतः- सत्य आचरण वाले । सभ्यः- सभी प्रकार के सत्य निर्णायक सभा के योग्य सम्मानित कुल में उत्पन्न ईमानदार व्यक्तित्व वाले । सत्यप्रियः- सत्य पदार्थों तत्त्वों को प्रिय मानने वाले । सत्यरायणः- सर्वदा सत्य मार्ग का ही आश्रय-ग्रहण करने वाले ।

सुसिद्धः सिद्धिदः साधुः सिद्धिभृत् सिद्धिसाधनः ।

सिद्धसेव्यः शुभकरः सामवित् सामगोमुनिः ॥ १० ॥

अर्थ- सुसिद्धः- सिद्धि प्राप्त जनों में अति प्रसिद्धि प्राप्ति किये लुये । सिद्धिदः- सिद्धि देनेवाले । साधुः- दूसरों के कार्यों का उपकार स्वरूपतया साधन करने वाले । सिद्धिभृत्ः- सिद्धि को धारण करने वाले । सिद्धिसाधनः- सिद्धिओं का साधन करने वाले । सिद्धसेव्यः- सिद्ध व्यक्तियों से सेवा करने योग्य । शुभकरः- कल्याण को करने वाले । सामवित्- सामवेद को जानने वाले । सामगः- समका जान करने वाले । मुनिः- वेदधर्म शास्त्रादि के तत्त्वों का मनन करने वाले ।

पूतात्मा पुण्यकृत्युण्यः पूर्णः पूर्तिकरोऽघडा ।

अञ्च्योऽर्थकः कृतीसौम्यः कृतज्ञः क्तुकृत् क्तुः ॥ ११ ॥

अर्थ-पूतात्माःपवित्र अन्तःकरणे वाले । पुण्यकृत्युण्यः कर्मों को करनेवाले । पुण्यः- पवित्र स्वरूप वाले । पूर्णः- आचार विचार बल बुद्धि विद्या आदि सभी प्रकार के वैभव से परिपूर्ण स्वरूप वाले । पूर्तिकरः-साधकों के अधुरे कर्मों को पूर्ण कर देने वाले । अघडाः पापों को नाश करने वाले । अञ्च्यः- सभी जनों से पूजनीय । अर्थकः स्वेष्य देव सर्वेश्वर श्रीरामजी की पूजा करने वाले । कृतीःकृतकार्य आचरण करने योग्य सभी कार्यों को सम्पादन किये हुये मडान् भाग्यशाली । सौम्यः-अति आकर्षक सुन्दर शरीर वाले । कृतज्ञः-दूसरे के किये थोड़े से कार्य का भी मडान् उपकार मानने वाले । क्तुकृत्ः श्रीरामयागादि अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पादन करने वाले । क्तुः यज्ञ स्वरूप वाले ।

अज्यः शीलवान् जेता विनेता नीतिमान् स्वभूः ।

वाग्मीश्रुतिधरः श्रीमान् श्रीदः श्रीनिधिरात्मदः ॥ १२ ॥

अर्थ- अज्यः-किसी से भी नहीं जिते जाने वाले अविजित । शीलवान्ःसत् आचरण के स्वभाव वाले । जेताःकामकोषादि सभी शत्रुओं को जितने वाले । विनेताःसभी जिववर्गों को सत् पथ की ओर ले जाने वाले । नीतिमान्ः अच्छी नीति से शोभित होने वाले । स्वभूः- स्वयं व्यक्त होने वाले अन्य कारण रहित स्वयं प्रकट अकारण पर पुरुष । वाग्मीःशास्त्र सम्मत सुन्दर एवं मधुर बोलने वाले । श्रुतिधरः- समस्त श्रुति वेदों को धारण करने वाले । श्रीमान्ः श्री लक्ष्मी प्रभृति ऐश्वर्य से युक्त रहने वाले । श्रीदः-श्री ऐश्वर्यादि को देनेवाले । श्रीनिधिः- श्री स्वरूपनिधि भजने वाले । आत्मदः- आत्मा को देने वाले साधकों को अपनी आत्मा को प्रकटित कर देनेवाले ।

सर्वज्ञः सर्वगः साक्षीसमः समदृशिः सदृक् ।

शुभज्ञः सुभदः शोभी शुभाचारः सुदर्शनः ॥ १३ ॥

अर्थ- सर्वज्ञः-पदार्थों को या अन्य सभी तत्त्वों को जैसा है वैसा यथार्थ रूपसे जानने वाले । सर्वगः-स्वर्ग मर्त्य पातालादि सभी जगह जाने वाले । साक्षीःसभी शुभाशुभ कर्मों के सत्यापन करने वाले प्रत्यक्ष द्रष्टा । समः सभी जिववर्ग में समान रूपसे व्यवहार करने वाले

। समदृशिःःभेदभाव रहित होकर सभी में समान दृष्टि रखने वाले । सदृक्ःपक्षपात रहित होकर सभी की समान रूपसे पूजा करने वाले । शुभज्ञः- सभी शुभ तत्त्वों को जानने वाले । शुभदः- सभी को कल्याणकारी पदार्थ को देनेवाले । शोभीःअपने पुण्यकृति के प्रभाव से स्वतः शोभित होने वाले । शुभाचारः-कल्याणकारी आचरण वाले । सुदर्शनः- मनोहारी-आकर्षक दर्शन वाले

जगदीशो जगत्पूज्यो यशस्वी धृतिमान् ध्रुवः ।

छतीदं कीर्तितं यस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १४ ॥

અર્થ-જગદીશ:-જગત્ સંસાર કો નિયન્ત્રિત કરને વાલે માલિક । જગત્પૂજ્ય:-સંસાર કે પૂજનીય । યશસ્વી:વિશાલ કીર્તિ-ચશ વાલે । ધૃતિમાન્: પ્રકાશ વાલે એવં ધ્રુવ:-નિશ્ચલ કિસી ભી પ્રકાર કે ઉપદ્રવોં સે વિચલિત નહીં હોને વાલે ઇસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી કે એકસૌ આઠ નામ હૈ ।

અધીયીતાથ શ્રુણુયાઘશ્ચાપિ પરિકીર્તયેત્ ।

અવાપ્રુયાશ્ચિયં લોકે વિપુલં શ્રદ્ધયાયુતઃ ॥ ૧૫ ॥

અર્થ- મુનિવર સુતીક્ષ્ણજી ! જો સાધક શ્રદ્ધાયુક્ત હોકર પૂર્વ વર્ણિત આચાર્યજી કે એકસૌ આઠ નામોં કા અધ્યયન કરેગા શ્રવણ કરેગા યા શ્રદ્ધા સે કીર્તન કરેગા વહ લોક મેં વિપુલ ઐશ્વર્ય કો પ્રાપ્ત કરેગા ।

અર્યેત્ સ્તવેન યો નિત્યમુપચારૈઃ સુસમ્ભૃતૈઃ ।

અનેન વિધિવત્તસ્ય પ્રસીદેત્ સ ગુણાકરઃ ॥ ૧૬ ॥

અર્થ- શ્રદ્ધા સે સમ્પાદિત સુન્દર પૂજા સામગ્રી સે જો સાધક ઇન એકસૌ આઠ દિવ્ય નામરૂપ સ્તવ સે વિધિવત્ નિત્ય પૂજા કરેગા ઉસકે ઊપર વાત્સલ્ય કારુણ્ય આદિ ગુણોં કે સમુદ્ર વે જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી પ્રસન્ન હોંગે ।

તસ્મિન્ દેવે પ્રસન્ને તુ ન કિંચિત્તસ્ય દુર્લભમ્ ।

ઇહલોકે પરત્રાપિ જગદીશે જગદ્ગુરૌ ॥ ૧૭ ॥

અર્થ-દેવ-શ્રીરામ સ્વરૂપ જગત્ કે ઇશ્વર એવં જગત્ કે ગુરુ જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી કે પ્રસન્ન હોને પર ઉસ સાધક પૂજક પુરુષ કે લિયે ઇસલોક એવં પરલોક મેં ભી કોઈ પદાર્થ દુર્લભ નહીં યાની વાગ્ધિત સભી પદાર્થ સુલભ હોંગે ॥

શ્રદ્ધયા માઘમાસેડર્યેત્ સમમ્યાં તું વિશેષતઃ ।

સંવત્સરાર્યનાજજાતમાપ્રુયાત્ ફલમુત્તમમ્ ॥ ૧૮ ॥

અર્થ- જો સાધકવર્ગ આચાર્યજી કી અવતાર તિથિ માઘકૃષ્ણ સપ્તમી કે દિન વિશેષ આયોજન કે સાથ શ્રદ્ધા કે સાથ પૂર્વ વર્ણિત વિધાન સે આચાર્યજી કી પૂજા કરેંગે ઉન્હેં વર્ષ ભર મેં પૂજા કરને સે જો ફલ પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહી ઉત્તમ ફલ પ્રાપ્ત હોગા ।

શ્રદ્ધાલવે સુશીલાય ગુરુભક્તિયુતાય ચ ।

પ્રદિશેદ્બ્રહ્મનિષ્ઠાય વેદવ્રતરતાય ચ ॥ ૧૯ ॥

અર્થ- શ્રીસુતીક્ષ્ણજી જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યજી કે દિવ્ય કથા કા ઉપદેશ શ્રદ્ધા વાલે સુશીલ એવં ગુરુભક્ત ઔર બ્રહ્મનિષ્ઠ- શ્રીરામચન્દ્રજી મેં ભી દૃઢઃ શ્રદ્ધા વાલે એવં વેદ વ્રતિપાદિત વ્રતોં કે આચરણ મેં તત્પર સાધકોં કો હી ઉપદેશ કરેં અશ્રદ્ધાવાનોં કો નહીં ।

ગોગનીયમિદં સદ્ધિઃ સદાસર્વપ્રયત્નતઃ ।

ન દેયં નાસ્તિકાયાથ નિન્દકાય ગુરુદ્રુહે ॥ ૨૦ ॥

अर्थ- सज्जनों को यादिये कि इस आचार्य श्री के अवतार कथा का प्रयत्नपूर्वक रक्षण करें- सुरक्षित रखे एवं नास्तिक निन्दक तथा गुरुजनों के द्रोहीजनों को इसका उपदेश न करें ।

सुपूजितेष्टप्रदपादपङ्कजः समर्थकानां विदधातु मङ्गलम् ।

सतामजस्रज्जगदीश्वरोऽरिथाम्ब्रितोऽसौऽकलिकल्पपादपः ॥ २१ ॥

अर्थ- जैसे कल्पवृक्ष आराधक की आकांक्षाओं को पूर्ण करता है वैसे ही कलियुगरूप कल्पवृक्ष-जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी की आराधना करने वाले साधक को वाञ्छित फल प्रदान करने वाले श्रीचरणकमल के सविधि आराधित होने से पापदारक जगदीश्वर श्रीराम स्वरूप आचार्यजी आराधक की सभी मंगलकामनाओं को निरन्तर पूर्ण किया करें ।

विराजतेऽयं तपसां प्रसूतिर्गुणाकरः सञ्चरितोऽद्विजार्थभूः ।


ससज्जनाग्नाभिश्चुतोवसंवदोऽभृद्व्रतश्चारुनृपावलीऽतः ॥ २२ ॥


अर्थ- ये संसार में प्रसिद्ध आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी जो कि तपश्चर्या सर्वेश्वर श्रीरामजी की आराधना जयन्ती उत्सव आदि के प्रसूति प्रवर्धक प्रचारक प्रसारक हैं तथा दया दक्षिण्य सौलभ्य सौशिल्य आदि अगाधित गुणों के आकर हैं एवं सत् चरित वाले हैं तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मण, श्रेष्ठ तीन प्रवर वाले शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाप्ता के अध्येता श्रीपुण्यसदनशर्माजी के पुत्ररत्न के रूपमें संवत् १२५६ माघकृष्ण सप्तमी को प्रकट हुये हैं और सन्त एवं सज्जन शिरोमणियों में अति विश्रुत-संवर्णित कीर्ति वाले हैं तथा मनोहारी आकर्षक वाणी बोलने वाले हैं और श्रेष्ठ राजाओं के समूह से सदा सेवित हैं एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारि के रूपसे ही श्रीवैष्णव संन्यास ग्रहण कर श्रीवैष्णवधर्म यज्ञ को संसार में प्रवर्तित किया हैं वे आचार्यसंराट् संसार में सर्वोत्कर्ष रूपसे विराजमान हैं ।

एति श्रीमद् मूल अगस्त्यसंछितायां भविष्यत्पुराणे अगस्त्य सुतीक्ष्ण संवादे श्रीरामानन्दाचार्याष्टोत्तरशतनामार्थन भडात्म्य वर्णनं नाम पञ्चत्रिंशोत्तर शततोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

There are two Agastya Samhitas, one which is under Narada Panchratra and another as original. The original means it doesn't come under Panchratric text. The 4th Parishishta of Agastya Samhita book that is linked below is a portion (adhyAya 131-135) of that original Agastya Samhita, which is not found completely but only in few chapters. There are quotes found which were quoted by pUrvachAryAs and historians. On this 4th Parishishta, there has been a proper commentary by many Acharyas.

Encoded and proofread by P. Sudarshana

——
Shri Ramanandacharya Janmotsava Katha
pdf was typeset on December 22, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

